प्रगति

वर्ष-8, अंक-17 जनवरी-मार्च, 2026

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली

महाप्रबंधक संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है कि आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका), रायबरेली की गृह पत्रिका '**प्रगति**' के मार्च 2026 अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे संगठन की रचनात्मक चेतना का दर्पण है, बल्कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति सौहार्द, प्रतिबद्धता और सक्रिय सहभागिता को भी सशक्त रूप में अभिव्यक्त करती है।

आरेडिका निरंतर कोच उत्पादन के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। इसके साथ-साथ यह अत्यंत संतोष का विषय है कि यहाँ के कार्मिक अपने मूल दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग तथा साहित्यिक एवं सृजनात्मक गतिविधियों में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

मुझे विशेष प्रसन्नता है कि हमारे कार्मिक उत्साहपूर्वक लेख, कविताएँ, संस्मरण, तकनीकी आलेख एवं नवोन्मेषी विचारों के माध्यम से हिंदी को कार्य-व्यवहार की सशक्त, प्रभावी एवं जीवंत भाषा के रूप में स्थापित करने में सतत योगदान दे रहे हैं।

इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका के संपादक मंडल, समस्त रेलकर्मियों एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सबके सामूहिक और निरंतर प्रयासों से आरेडिका गुणवत्ता, नवाचार एवं उपलब्धियों के नए आयाम स्थापित करता रहेगा।

सभी पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(विवेक खरे)
महाप्रबंधक

प्रगति

मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से...

राजभाषा हिंदी किसी दायित्व का निर्वहन मात्र नहीं, बल्कि हमारे संगठन की कार्यसंस्कृति, सोच और संवेदना की अभिव्यक्ति है। इस दृष्टि से हिंदी गृह पत्रिका का यह अंक केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भाषायी चेतना और रचनात्मक सहभागिता का जीवंत दस्तावेज है। इसी भावना के साथ आरेडिका की गृह पत्रिका 'प्रगति' का नवीनतम अंक आप सभी सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है । आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि 'प्रगति' पत्रिका का यह अंक आपको रुचिकर लगेगा ।

रमेश चन्द्र
मुख्य राजभाषा अधिकारी

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से...

राजभाषा टीम का हिस्सा बनना मेरे लिए हर्ष और गर्व का विषय है। अब तक मैं इस पत्रिका से एक पाठक के रूप में जुड़ा रहा हूँ और प्रत्येक अंक की प्रतीक्षा करना सदैव सुखद अनुभव रहा है। पहली बार इसके संपादन एवं प्रकाशन की प्रक्रिया का हिस्सा बनना मेरे लिए एक नई जिम्मेदारी के साथ-साथ सीखने का अवसर भी है। मेरा प्रयास रहेगा कि पत्रिका में नई ऊर्जा, नवीन विचार और उपयोगी सामग्री का समावेश हो, जिससे यह और अधिक रुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक बन सके। मैं सभी पाठकों एवं सहयोगियों से रचनात्मक सहभागिता का आग्रह करता हूँ, ताकि हिंदी में ज्ञान-विस्तार को बढ़ावा मिल सके और यह पत्रिका निरतंर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

अभिनव यादव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

राजभाषा अधिकारी की कलम से...

राजभाषा हिंदी की दृष्टि से पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए हम कृतसंकल्प हैं तथा आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है। आपके सहयोग से ही पत्रिका रोचक एवं ज्ञानवर्धक बन सकती है। पत्रिका के अगले अंक के लिए अपनी रचना एवं इस पत्रिका को बेहतर बनाने हेतु अपने सुझाव ईमेल द्वारा **rajbhashaadhikarimcf@gmail.com** पर सहर्ष प्रेषित कर सकते हैं।

राकेश रंजन
राजभाषा अधिकारी

आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष :	**महाप्रबंधक महोदय**
मुख्य राजभाषा अधिकारी :	**महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त**
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी :	**उप मुख्य यांत्रिक अभियंता/बोगी & ह्वील** **(नामित सदस्य)**
राजभाषा अधिकारी :	**सहायक सचिव/गोपनीय** **(नामित सदस्य)**
सदस्य :	**प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता** **प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी** **प्रधान मुख्य सामग्री प्रबन्धक** **प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी** **प्रधान मुख्य अभियंता** **प्रधान वित्त सलाहकार** **प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता** **प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त** **मुख्य प्रशासनिक अधिकारी**

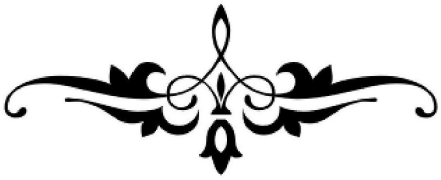

जनवरी-मार्च, 2026 त्रैमासिक अंक - 17

संरक्षक
विवेक खरे
महाप्रबंधक

मुख्य संपादक
रमेश चन्द्र
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
महानिरीक्षक-सह- प्रधान मुख्य
सुरक्षा आयुक्त

उप मुख्य संपादक
अभिनव यादव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप मुख्य यांत्रिक अभियंता

संपादक
राकेश रंजन
राजभाषा अधिकारी एवं
सहायक सचिव (गोपनीय)

संपादन सहयोग
मोहम्मद अकरम
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जितेन्द्र कुमार
वरि. आशुलिपिक

सौरभ कुमार
वरि. लिपिक

आवरणः

आरेडिका में निर्मित वंदे भारत ट्रेन
(निर्माण के अंतिम चरण में)

अनुक्रम

क्र सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	आवर्त सारणी कैफे	शबीह अहमद	3
2	व्यक्तिगत वित्त श्रम से उपजी संपत्ति का संरक्षण	अभिनव यादव	5
3	आरेडिका की पर्यावरणीय जागरूकता और समाज पर उसका प्रभाव	अनिल कुमार श्रीवास्तव	15
4	बेटी का आसमान	मधु तिवारी	25
5	मनचला शब्दकार हूँ मैं	ओम शंकर झा	27
6	मानव व्यवहार	जितेन्द्र कुमार	29
7	चूल्हे की आग और आँखों का पानी	प्रियंका राणा	31
8	एक दिन बिना मोबाइल के	शाबरा बेगम	32
9	माँ तुम कुछ नहीं जानती	विनोद कुमार मौर्य	35
10	नारी की महिमा	भावना	37
11	भारतीय भाषाएँ और हिंदी राजभाषाः भाषाई एकता की सशक्त धुरी	सीतेश कुमार शर्मा	39
12	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'गोदान'	सौरभ सचान	41
13	सच्चाई, धोखा और कमजोरी	वसीम रज़ा इदरीसी	43
14	कल और आज का जीवन	नवल किशोर यादव	46
15	स्वप्न से सिद्धि तक	सौरभ कुमार	47
16	लालचदास	रोहित मिश्र	48
17	भय- एक चुनौती	राजेश पाल	49
18	भारत मेरी पहचान	विमलेश कुमार गुप्ता	50
19	कर्ण-कुन्ती संवाद	शिखा रावत	52
20	प्रगति की शान...	गौरंग बोरो	53
21	रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में आरेडिका में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का आयोजन	राजभाषा विभाग	55

संपर्कः राजभाषा विभाग
आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली

ई-मेलःrajbhashaadhikarimcf@gmail.com

नोटः पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं ।

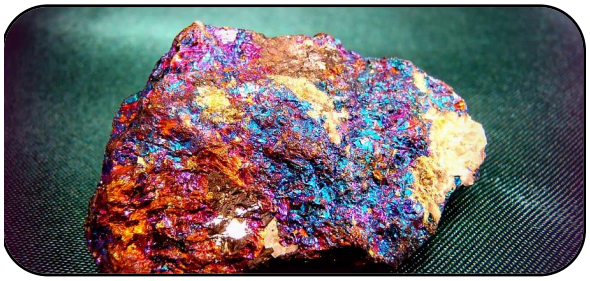

शबीह अहमद
वरिष्ठ यांत्रिक अभियंता
(परियोजना विभाग)
मो. 7318060444

आवर्त सारणी कैफे
(Periodic Table Cafe)

रसायन नगर में एक कैफे हुआ करता था "आवर्त सारणी कैफे (Periodic Table Cafe)", जहाँ पर जाने के लिए केवल पंजीकृत सदस्यों (Elements) को ही अनुमति हुआ करती थी। इन सदस्यों की कुल संख्या 118 थी। हर एक सदस्यों के अपने मिजाज़, अपनी कुव्वत और अपनी कहानी होती थी। मुझे इत्तेफाक से दूसरे शहर के होने के कारण आगंतुक के रूप में कुछ देर रुकने और कॉफ़ी पीने की अनुमति मिल गयी। मैं वहां बैठकर पंजीकृत सदस्यों की आपस की वार्तालाप सुनने लगा।

श्रीमान हाइड्रोजन:- "दोस्तों, मानो या न मानो, इस यूनिवर्स की शुरुआत मुझसे ही हुई थी! मैं न होता तो तुम सब भी न होते। मुझसे ही हर कहानी शुरू होती है। मैं तारा भी हूँ, पानी भी हूँ, और आग भी। पर सब मुझे हल्का समझ लेते हैं..."

श्रीमान ऑक्सीजन:- (भारी आवाज़ में) "ठीक है श्रीमान हाइड्रोजन!!! अपना अहंकार थोड़ा कम करो। ज़िंदगी तो मुझसे ही चलती है। साँस, पानी, आग... सब में मैं ही हूँ। पर मुझे एक कष्ट हमेशा रहता है, लोग मुझे तभी याद करते हैं जब मैं खत्म होने लगता हूँ। इन सबके बावजूद मैं सबको संभालता हूँ। वैसे मैं यह मानता हूँ, तुम हल्के हो... पर ज़रूरी भी हो।"

श्रीमान कार्बन:- (मुस्कुराते हुए) "अरे भाई, लड़ो मत। तुम दोनों मिलकर ही तो पानी बनाते हो, जो सबके जीवन के लिए अति आवश्यक है। वैसे ज़रा मुझे देखो... हीरे से लेकर इंसान तक, सब मेरी रचनात्मकता का कमाल है। तुम दोनों बहुत खुशकिस्मत हो कि लोग तुमको तुम्हारे नाम से जानते

हैं। मैं हर किसी में हूँ,पर कोई मुझे मेरे नाम से नहीं जानता। कभी कोयला, कभी हीरा और कभी इंसान से मुझे जानते हैं"।

श्रीमान आयरन:- (तंज़ करते हुए) "रचनात्मकता ठीक है कार्बन, पर ताकत का असली मतलब मैं सिखाता हूँ। बिना मेरे, न पुल होते न तलवारें। फिर मुट्ठी भीजते हुए कहा; मैं टूटता हूँ, जंग लगता हूँ, फिर भी दुनिया का बोझ उठाता हूँ। मज़बूत होना आसान नहीं होता।"

श्रीमती गोल्ड:- (चमकते हुए) "और बिना मेरे लोग शादी भी नहीं करते। वैसे आयरन, लोग तुम्हें इस्तेमाल करते हैं, मुझे संभालकर रखते हैं। और मैं...बिना काम के भी कीमती हूँ। पिछले एक साल में लगभग मेरा दाम रूपए 70000 प्रति दस ग्राम बढ़ गया है। कभी-कभी सोचती हूँ — क्या कीमती होना, उपयोगी होने से ज़्यादा ज़रूरी है?"

श्रीमान सोडियम और क्लोरीन:- जो एक ही बेंच पर बैठे थे, एक साथ बोले "हम अकेले तो खतरनाक हैं, पर साथ हों तो ज़िंदगी का स्वाद बन जाते हैं।"

श्रीमान यूरेनियम:- "मुझे एक खामोश, ताक़तवर, खतरनाक तत्व के रूप में सब जानते हैं। अगर मेरी क़ुव्वत किसी गलत हाथ लग जाये तो तबाही...; और अगर सही जगह इस्तेमाल हो जाऊं तो रोशनी !!!"

श्रीमान हीलियम:- (ऊँघते हुए); "तुम सब को तो किसी न किसी का साथ चाहिए, पर मुझे तो किसी का साथ नहीं चाहिए। भगवान ने मुझे परिपूर्ण करके दुनिया में भेजा है"।

तभी कैफ़े के मालिक आये और सबसे पहले हीलियम को डांटते हुए कहा; नोबल हो तो कम से कम मैनर्स भी तो नोबल वाले रखो !!! फिर भरभरी आवाज़ में कहा; "तुम सब सही हो। पर इस रसायन नगर का सबसे बड़ा नियम यही है कि कोई भी एलिमेंट तब तक पूरा नहीं होता, जब तक कि वो किसी से जुड़ता नहीं ... यह एक सीख है कि अलग होकर भी कैसे एक-दूसरे से जुड़ा जाए। अकेले हम कुछ नहीं, पर साथ मिलकर सब कुछ हैं"....

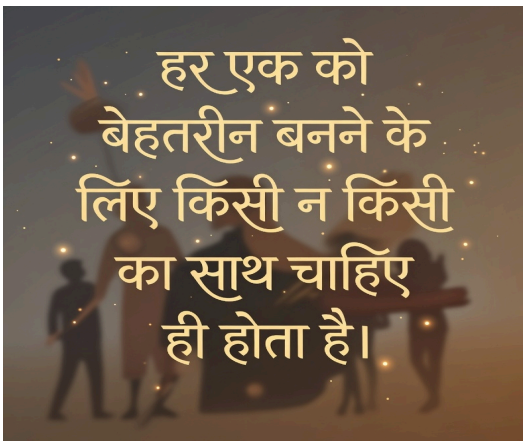

तभी कुछ गिरने की आवाज़ आयी और मेरी नींद खुल गयी!!! और मैं सोचने लगा; क्या एलिमेंट भी इंसान की ही तरह अलग-अलग अपने को बेहतर समझते हैं? पर कितनी खूबसूरत बात है कि, चाहे एलिमेंट हो या इंसान... हर एक को बेहतरीन बनने के लिए किसी न किसी का साथ चाहिए ही होता है। अन्यथा जीवन हीलियम जैसे की ही तरह अकेला, नीरस और किसी काम का नहीं रह जाता है।

अभिनव यादव
उप मुख्य यांत्रिक अभियंता
(बोगी & ह्वील)
मो. 9462704340

व्यक्तिगत वित्त
श्रम से उपजी संपत्ति का संरक्षण

"यह सोने या चाँदी से नहीं, बल्कि श्रम से था कि संसार की सारी संपत्ति मूल रूप से प्राप्त हुई; और जो इसे धारण करते हैं तथा इसे किसी नई वस्तु के बदले में विनिमय करना चाहते हैं, उनके लिए इसका मूल्य ठीक उतना ही है जितना श्रम यह खरीदने या नियुक्त करने की क्षमता प्रदान कर सकता है।" — एडम स्मिथ, वेल्थ ऑफ नेशंस (1776)

एडम स्मिथ का यह कथन व्यक्तिगत वित्त की मूल आत्मा को उजागर करता है। यह हमें स्मरण कराता है कि संपत्ति का सच्चा स्रोत सोना, चाँदी या कोई जटिल वित्तीय उत्पाद नहीं, अपितु मानव श्रम, समय और कौशल है।

भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ करोड़ों लोग दैनिक मजदूरी या नौकरी से परिवार चलाते हैं, पैसा हमारी जीवन शक्ति का संचित रूप मात्र है। इसलिए, इसका सही उपयोग, संरक्षण और वृद्धि केवल आर्थिक निर्णय नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन का हिस्सा है।

व्यक्तिगत वित्त का मूल उद्देश्य धन संचय नहीं, वरन् आर्थिक स्वतंत्रता, जोखिमों से सुरक्षा और मानसिक शांति प्राप्त करना है। जे.एल. कोलिंस की पुस्तक धन की सरल राह (The Simple Path to Wealth) में इसे 'वित्तीय स्वतंत्रता, पूर्व सेवानिवृत्ति' (Financial Independence, Retire Early - FIRE) के रूप में वर्णित किया गया है, जहाँ बचत और निवेश द्वारा व्यक्ति अपनी मासिक आय पर आश्रित होना छोड़ देता है। एक प्रचलित नियम के अनुसार वार्षिक खर्च का पच्चीस गुना राशि से आजीवन जीवन व्यतीत किया जा सकता है (इसमें ये निहित है कि मुद्रास्फीति शून्य बनी रहे)।

यह लेख आपको निवेश की दुनिया से परिचित कराएगा। क्योंकि आप भी तो चाहते हैं—इतनी आर्थिक सुरक्षा प्राप्त हो कि जीविका हेतु काम करना अनिवार्य न रहे। है ना?

बचत क्यों आवश्यक है? आपातकालीन निधि का सुरक्षा कवच-

जीवन स्वभावतः अनिश्चितताओं से भरा है—गंभीर बीमारी, दुर्घटना, नौकरी का जाना, बढ़ते पारिवारिक दायित्व या कोई भी अप्रत्याशित खर्च कभी भी सामने आ सकता है। ऐसे समय में

बचत ही व्यक्तिगत वित्त की वास्तविक आधारशिला बनती है। अच्छे समय में संजोई गई संपत्ति कठिन समय को न केवल सहनीय बनाती है, बल्कि व्यक्ति को सम्मान और विकल्प भी देती है। कोरोना महामारी के दौरान कामगारों का पैदल गाँवों की ओर प्रस्थान आज भी सामूहिक स्मृति में अंकित है; असंख्य परिवार आपातकालीन निधि से लगभग वंचित रहे होंगे—और यही असुरक्षा उनके कष्ट को और गहरा कर गई।

बचत केवल भविष्य की अनिश्चितताओं से सुरक्षा नहीं देती, बल्कि वर्तमान को भी स्थिरता प्रदान करती है। पर्याप्त बचत वाला व्यक्ति संकट की घड़ी में घबराहट या मजबूरी में गलत वित्तीय निर्णय नहीं लेता। वह उधार के जाल, ऊँचे ब्याज या जल्दबाज़ी में संपत्ति बेचने जैसी स्थितियों से बच सकता है। इस प्रकार बचत आत्मनिर्भरता, अनुशासन और धैर्य का व्यावहारिक पाठ पढ़ाती है।

इसी कारण वित्तीय सलाहकार सामान्यतः 6 से 12 महीनों के खर्च के बराबर आपातकालीन निधि रखने की सिफारिश करते हैं। उदाहरणस्वरूप, यदि आपका मासिक खर्च ₹50,000 है, तो 3 से 6 लाख तक की राशि तरल रूप में—जैसे बचत खाते या लिक्विड फंड—में उपलब्ध होनी चाहिए। ऐसी तैयारी जीवन की अनिश्चितताओं के बीच एक मजबूत सुरक्षा कवच का कार्य करती है और व्यक्ति को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में सक्षम बनाती है।

निवेश क्यों ज़रूरी है? महँगाई की चाबुक से मुक्ति-

केवल बचत करना पर्याप्त नहीं, क्योंकि समय के साथ पैसे की खरीद क्षमता घटती जाती है। इसका प्रमुख कारण महँगाई है। जनवरी 2025 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति 4.26% रही जबकि बचत खातों में ब्याज दर मात्र 2-4 प्रतिशत थी। परिणामस्वरूप, वास्तविक प्रतिफल (real return) नकारात्मक हो जाता है। आज के 1 लाख रुपये 10 वर्ष बाद 5 प्रतिशत महँगाई पर मात्र 61,391 रुपये के बराबर रह जाएंगे। यदि पैसा तिजोरी या कम ब्याज वाले खाते में पड़ा रहे, तो यह धीरे-धीरे मूल्यहीन होता जाता है।

यहीं निवेश की अनिवार्यता जन्म लेती है। निवेश का मूल उद्देश्य महँगाई दर को पार करना, खरीद क्षमता की रक्षा करना और दीर्घकाल में संपत्ति का निर्माण करना है। उदाहरणस्वरूप, यदि आप प्रतिमाह 10,000 रुपये की व्यवस्थित निवेश योजना (SIP) 12 प्रतिशत प्रतिफल पर 20 वर्ष तक चलाएं, तो यह लगभग 1 करोड़ रुपये बन जाएगा—यह चक्रवृद्धि ब्याज का चमत्कार है। निवेश बचत को बढ़ाता है और जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं के लिए तैयार करता है जैसे सेवानिवृत्ति, आवास, संतान की शिक्षा, इत्यादि।

	A	B	C
1	Monthly SIP Amount	₹10,000	
2	Period (Years)	20	
3	Expected Annual Return	12%	
4			
5	Amount at the end of Period	₹98,92,554	=FV(B3/12,B2*12,-B1)
6			

चक्रवृद्धि ब्याज का चमत्कार

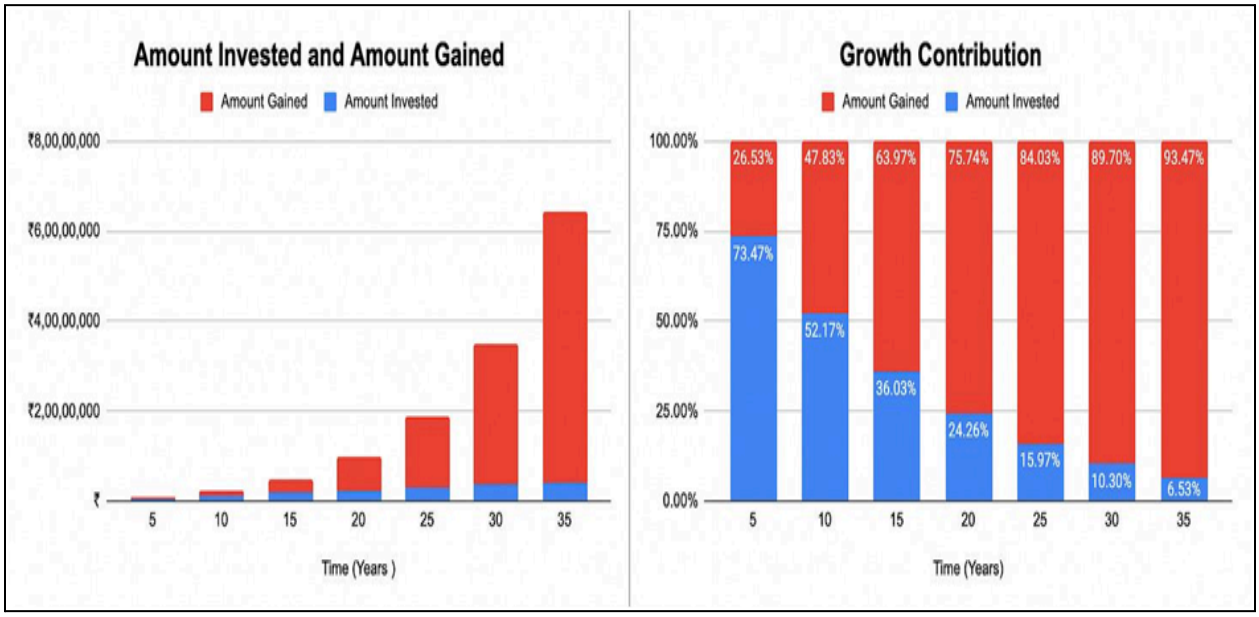

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के सूचकांक निफ्टी ने अप्रैल 1996 से जनवरी 2026 तक लगभग 12 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) प्रदान की है। वहीं बचत खाते और सावधि जमा में 2-4% और 6-8%, क्रमश: की उम्मीद की जा सकती है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि इक्विटी ही महँगाई को मात देने का सशक्त माध्यम है, बशर्ते धैर्य रखा जाए।

तालिका 1: घरेलू क्षेत्र की वित्तीय परिसंपत्तियों एवं देनदारियों का प्रवाह – साधनवार (राशि ₹ करोड़ में) [Source: RBI]

मद	2022–23	2023–24	2024–25
शुद्ध वित्तीय परिसंपत्तियाँ (I–II)	13,30,635	15,94,580	19,94,202
शुद्ध वित्तीय परिसंपत्तियाँ (% GDP के रूप में)	4.9	5.3	6
I. वित्तीय परिसंपत्तियाँ	29,27,254	34,73,718	35,60,845
वित्तीय परिसंपत्तियाँ (% GDP के रूप में)	10.9	11.5	10.8
जिसमें से:			
1. कुल जमा	11,08,876	13,78,266	12,54,664
कुल वित्तीय परिसंपत्तियों में हिस्सा (%)	**37.88%**	**39.68%**	**35.23%**
2. जीवन बीमा निधियाँ	5,48,945	6,47,061	5,34,815
3. भविष्य निधि एवं पेंशन निधियाँ (PPF सहित)	6,17,793	7,19,360	7,92,529
4. मुद्रा (नकद)	2,37,610	1,18,026	2,09,674
कुल वित्तीय परिसंपत्तियों में हिस्सा (%)	**8.12%**	**3.40%**	**5.89%**
5. निवेश (कुल)	2,13,962	3,01,254	5,36,251
कुल वित्तीय परिसंपत्तियों में हिस्सा (%)	**7.31%**	**8.67%**	**15.06%**
└ म्यूचुअल फंड	1,79,088	2,38,962	4,65,930
कुल वित्तीय परिसंपत्तियों में हिस्सा (%)	6.12%	6.88%	13.08%
└ इक्विटी (शेयर)	23,038	29,080	73,567
कुल वित्तीय परिसंपत्तियों में हिस्सा (%)	0.79%	0.84%	2.07%
6. लघु बचत (PPF को छोड़कर)	2,00,068	3,09,751	2,32,913
II. वित्तीय देनदारियाँ	15,96,618	18,79,138	15,66,643
वित्तीय देनदारियाँ (% GDP के रूप में)	5.9	6.2	4.7
ऋण / उधारी			
1. वित्तीय निगम	15,95,665	18,78,666	15,65,928
2. गैर-वित्तीय निगम (निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र)	135	138	139
3. सामान्य सरकार	818	334	576

तालिका 1 में भारतीय घरेलू क्षेत्र की वित्तीय परिसंपत्तियों का आँकड़ा प्रस्तुत किया गया है, जिससे देश के घरेलू बचत और निवेश के बदलते रुझान स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

आँकड़ों के अनुसार कुल वित्तीय परिसंपत्तियों का लगभग 35 प्रतिशत हिस्सा अभी भी अवधि जमा (टर्म डिपॉजिट) के रूप में है, जो घरेलू निवेशकों की सुरक्षित और सुनिश्चित प्रतिफल वाली प्रवृत्ति

को दर्शाता है। वहीं नकदी के रूप में रखी गई परिसंपत्तियों में पिछले तीन वर्षों के दौरान हल्की गिरावट देखने को मिलती है, जो यह संकेत देती है कि लोग धीरे-धीरे निष्क्रिय नकदी रखने के बजाय उसे अन्य साधनों में लगाने लगे हैं।

सबसे अधिक ध्यानाकर्षक परिवर्तन निवेश के आँकड़ों में दिखाई देता है, जिसमें पिछले दो वर्षों में दो गुना से अधिक की वृद्धि हुई है। वर्ष 2024–25 में निवेश कुल वित्तीय परिसंपत्तियों का लगभग 15 प्रतिशत तक पहुँच गया है। इस निवेश का बड़ा हिस्सा—लगभग 13 प्रतिशत—म्यूचुअल फंड्स में है, जबकि करीब 2 प्रतिशत सीधे इक्विटी (शेयरों) में लगाया गया है।

यह संरचना बताती है कि घरेलू निवेशक अपेक्षाकृत पेशेवर और विविधीकृत माध्यमों के ज़रिये बाज़ार में भागीदारी बढ़ा रहे हैं। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो वर्ष 2023 में संयुक्त राज्य अमेरिका के घरेलू निवेशकों की कुल वित्तीय परिसंपत्तियों में से लगभग 47.6 प्रतिशत सीधे इक्विटी में निवेशित था, जबकि म्यूचुअल फंड्स का हिस्सा 16.5 प्रतिशत रहा और बैंक जमा तथा सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट (CDs) मिलाकर केवल 21.3 प्रतिशत परिसंपत्तियाँ ही इनमें रखी गई थीं।

ये आँकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि देश में बचत को संजोने का ढंग धीरे-धीरे बदल रहा है—सिर्फ सुरक्षित जमा से आगे बढ़कर उत्पादक निवेश की ओर। यह परिवर्तन दीर्घकाल में पूँजी निर्माण, आर्थिक वृद्धि और घरेलू वित्तीय सशक्तिकरण के लिए वांछनीय है। जैसा कि गौतम बैद अपनी पुस्तक "The Joys of Compounding: The Passionate Pursuit of Lifelong Learning" में बचत को 'समय के लाभ की प्रथम सीढ़ी' कहते हैं, निवेश में सबसे प्रभावी तत्व समय ही है। जितने लंबे समय तक निवेशित रहा जाए, चक्रवृद्धि का प्रभाव उतना ही गहरा और प्रतिफल उतना ही मधुर होता जाता है।

निवेश के साधन: संपत्ति और दायित्व का स्पष्ट भेद-

निवेश की दुनिया में प्रवेश से पूर्व, संपत्ति (एसेट) और दायित्व (लाइबिलिटी) का अंतर समझना अनिवार्य है। संपत्ति वह है जो समय के साथ आर्थिक लाभ प्रदान करती है या भविष्य में आय सृजन की क्षमता रखती है, जबकि दायित्व वह है जो निरंतर संसाधनों का व्यय कराता है और भविष्य की नकदी प्रवाह पर दबाव बनाता है। वित्तीय रूप से सशक्त व्यक्ति का लक्ष्य संपत्तियों का निर्माण और दायित्वों का नियंत्रण होता है। उदाहरणतः स्वयं का उपयोगी घर, जो किराया आय दे सके, संपत्ति माना जा सकता है; वहीं केवल उपभोग हेतु खरीदी गई विलासितापूर्ण कार, जिसकी मासिक किस्त, ईंधन और रखरखाव पर नियमित खर्च हो, दायित्व की श्रेणी में आती है।

निवेश का मूल सिद्धांत केवल प्रतिफल (Return) देखना नहीं, बल्कि उससे जुड़े जोखिम (Risk; mathematically standard deviation in past returns of an asset) को भी समझना है। सामान्यतः अधिक प्रतिफल की संभावना अधिक जोखिम के साथ आती है, जबकि कम

जोखिम वाले साधनों में प्रतिफल सीमित रहता है। अतः विवेकपूर्ण निवेश वही है जिसमें निवेशक अपने लक्ष्य, समयावधि और जोखिम सहनशीलता के अनुरूप जोखिम–प्रतिफल संतुलन स्थापित करे।

संपत्तियाँ दो प्रमुख वर्गों में विभाजित हैं—वास्तविक और वित्तीय। वास्तविक संपत्तियाँ वे हैं जिनका भौतिक अस्तित्व होता है, जैसे भूमि, भवन, सोना या कृषि योग्य भूमि। इनका प्रमुख लाभ यह है कि ये मुद्रास्फीति के विरुद्ध आंशिक सुरक्षा प्रदान करती हैं और भौतिक स्वामित्व का मानसिक संतोष देती हैं। सीमित उपलब्धता और बढ़ती माँग के कारण इनमें दीर्घकाल में मूल्य वृद्धि की संभावना रहती है। परंतु इनके साथ जोखिम भी जुड़े हैं—कम तरलता (खरीद–फरोख्त में समय लगना), उच्च प्रारंभिक पूँजी, रखरखाव खर्च, कर भार और कानूनी जटिलताएँ।

वित्तीय संपत्तियाँ अमूर्त होती हैं और किसी संस्था, सरकार या कंपनी के स्वामित्व दावे अथवा भविष्य के भुगतान अधिकार से अपना मूल्य प्राप्त करती हैं—जैसे बैंक जमा, सरकारी बॉन्ड, म्यूचुअल फंड और इक्विटी शेयर। ये अधिक तरल, पारदर्शी और छोटे निवेशकों के लिए सुलभ होती हैं, किंतु इनके प्रतिफल बाजार उतार–चढ़ाव के अधीन रहते हैं।

यहाँ जोखिम-समायोजित प्रतिफल (Risk-Adjusted Return) की अवधारणा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। केवल ऊँचा प्रतिफल पर्याप्त नहीं; यह देखना भी ज़रूरी है कि वह प्रतिफल कितने जोखिम के साथ प्राप्त हुआ। इसी को मापने के लिए शार्प अनुपात (Sharpe Ratio) जैसे मानक प्रयोग में आते हैं, जो यह बताते हैं कि किसी निवेश ने जोखिम-मुक्त प्रतिफल से ऊपर कितनी अतिरिक्त कमाई की और उसके लिए कितना जोखिम लिया गया। सामान्यतः अधिक शार्प अनुपात बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन को दर्शाता है।

एक सफल निवेशक विभिन्न प्रकार की संपत्तियों को मिलाकर ऐसा पोर्टफोलियो बनाता है जिनका आपसी सहसंबंध कम हो। एसेट्स का कम सहसंबंध (low correlation) पोर्टफोलियो की अस्थिरता घटाता है और बड़ी गिरावट से सुरक्षा देता है। यही कारण है कि, कहा जाता है—सारे अंडे एक ही टोकरी में नहीं रखने चाहिए। एक संतुलित पोर्टफोलियो में वास्तविक और वित्तीय दोनों प्रकार की संपत्तियाँ, तथा जोखिम-समायोजित दृष्टिकोण से चुने गए साधन शामिल होने चाहिए।

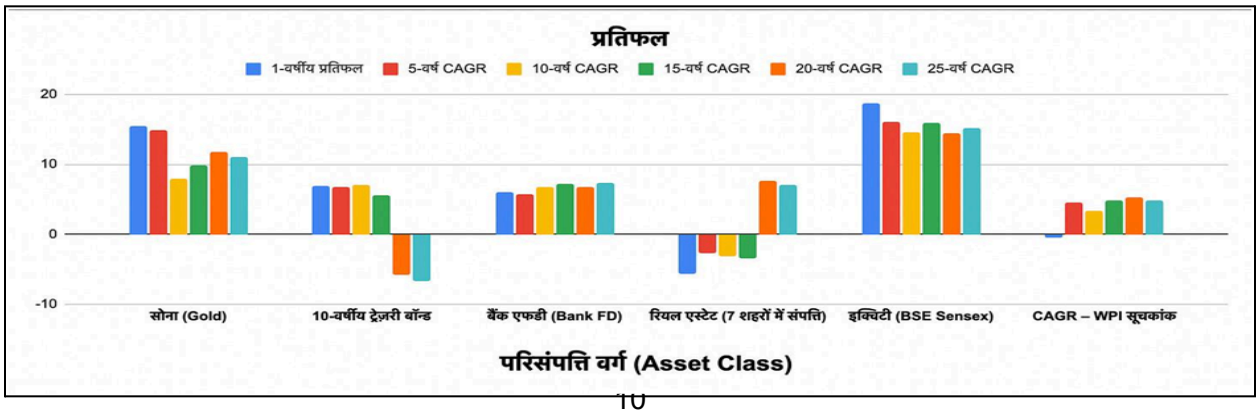

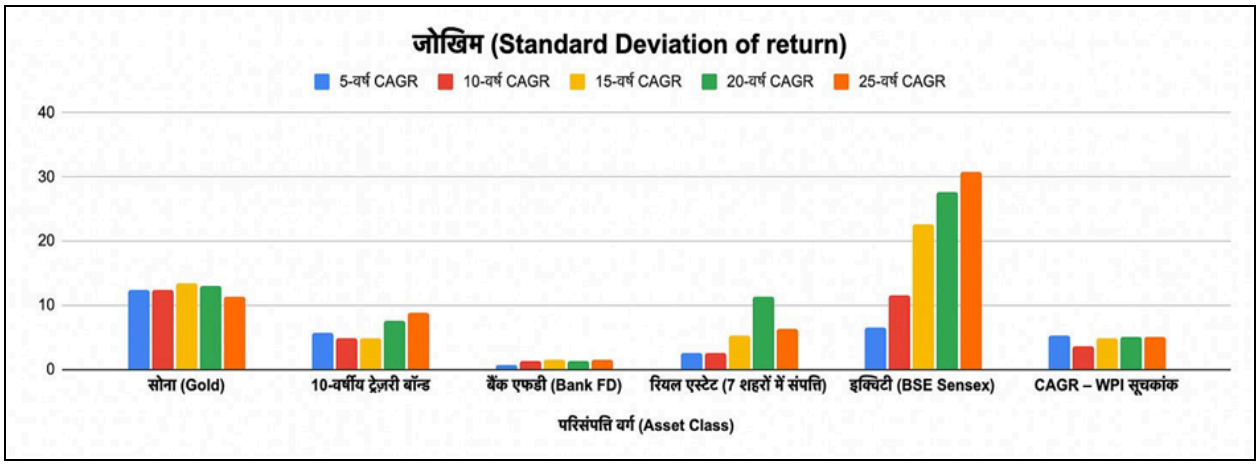

source: Equity returns outclass gold, FD, property in the long term: Morgan Stanley (Business Standard, Nov 13 2024)

व्यवस्थित निवेश योजना (SIP): अनुशासन का शक्तिशाली माध्यम

व्यवस्थित निवेश योजना (SIP) परस्पर निधि में नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि निवेश करने की सरल, अनुशासित और प्रभावी विधि है। यह रुपये मूल्य औसतन (Rupee Cost Averaging) के सिद्धांत पर कार्य करती है, जिसके तहत बाज़ार के उतार–चढ़ाव का प्रभाव समय के साथ संतुलित हो जाता है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (AMFI) के आँकड़ों के अनुसार, नवंबर 2025 तक म्यूचुअल फंड उद्योग में लगभग 25 करोड़ पोर्टफोलियो के माध्यम से करीब 81 लाख करोड़ रुपये निवेशित हैं, जो SIP और फंड आधारित निवेश पर बढ़ते भरोसे को दर्शाता है।

हाल के वर्षों में व्यक्तिगत निवेशकों के बीच डायरेक्ट इंडेक्स फंड्स की लोकप्रियता भी बढ़ी है। वित्तीय जगत के कई प्रमुख चिंतक और निवेश विशेषज्ञ यह मानते हैं कि लंबी अवधि के निवेश के लिए डायरेक्ट इंडेक्स फंड्स एक व्यवहारिक और पारदर्शी विकल्प हो सकते हैं। इसका प्रमुख कारण है इनका कम मैनेजमेंट फीस (TER) और तथाकथित "ऑटो-क्लीनिंग" तंत्र। शेयर बाज़ार सूचकांक (Indices) स्पष्ट और नियम-आधारित चयन पद्धति पर कार्य करते हैं, जो प्रायः बाज़ार पूँजीकरण (Market Capitalization) पर आधारित होती है। किसी कंपनी का प्रदर्शन कमजोर होने पर वह स्वतः सूचकांक से बाहर हो जाती है और बेहतर प्रदर्शन करने वाली नई कंपनियाँ स्वतः शामिल हो जाती हैं।

यह संरचना निवेशक को स्टॉक चयन के जोखिम से काफी हद तक मुक्त करती है। इतिहास बताता है कि लंबी अवधि में सूचकांक ऊपर की ओर बढ़ते हैं, जबकि व्यक्तिगत शेयरों में गिरावट या स्थायी नुकसान की संभावना बनी रहती है। इसलिए, SIP के माध्यम से इंडेक्स फंड्स में नियमित निवेश करना समय, अनुशासन और कम लागत का संतुलित संयोजन प्रदान करता है।

डेरिवेटिव्स ट्रेडिंग: खुदरा निवेशकों के लिए वित्तीय जाल-

सेबी के 2024 अध्ययन ने इक्विटी डेरिवेटिव्स (F&O) की कड़वी सच्चाई सामने ला दी है। **वित्त वर्ष 24 में 91 प्रतिशत व्यक्तिगत ट्रेडरों को नुकसान हुआ। औसतन प्रति व्यक्ति 1.20 लाख रुपये का शुद्ध घाटा उठाना पड़ा।** यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि F&O सट्टेबाजी का मैदान बन चुका है, जहाँ साधारण निवेशक लगातार हारते हैं।

जबकि खुदरा निवेशक घाटे झेल रहे थे, प्रोप्रायटरी ट्रेडरों ने 33,000 करोड़ रुपये और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPI) ने 28,000 करोड़ रुपये का लाभ कमाया। इस असमानता का मूल कारण एल्गोरिदमिक व्यापार है। FPI के 97 प्रतिशत और प्रोप्रायटरी ट्रेडरों के 96 प्रतिशत लाभ कंप्यूटर एल्गोरिदम से आए, जो बहु-आयामी डेटा विश्लेषण कर मिलीसेकंडों में निर्णय लेते हैं। खुदरा निवेशक मोबाइल ऐप पर भावनात्मक फैसले लेते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा असंभव हो जाती है। ऑप्शंस ट्रेडिंग सबसे घातक सिद्ध हुई। 99 प्रतिशत F&O ट्रेडरों ने इसमें पैसा लगाया, लेकिन 91.5 प्रतिशत को नुकसान हुआ। फ्यूचर्स में यह अनुपात अपेक्षाकृत कम (60 प्रतिशत) रहा। लेन-देन शुल्क ने प्रति व्यक्ति 26,000 रुपये अतिरिक्त नुकसान बढ़ाया। ये लागतें घाटे को और गहरा करती हैं।

30 वर्ष से कम आयु के युवाओं में F&O का क्रेज तेजी से बढ़ा है। इनमें 93 प्रतिशत घाटे में रहे। कम आय वर्ग के निवेशक सबसे अधिक प्रभावित हुए। पहली बार ट्रेड करने वालों ने शुरुआत में ही भारी नुकसान झेला। सबसे चिंताजनक यह है कि 75 प्रतिशत घाटे वाले ट्रेडर नुकसान के बावजूद ट्रेडिंग जारी रखते रहे। यह जोखिम की गंभीर समझ के अभाव को दर्शाता है।

सेबी का स्पष्ट संदेश है कि F&O संपत्ति निर्माण का माध्यम नहीं, बल्कि खुदरा निवेशकों का वित्तीय क्षरण है। उच्च लेन-देन लागत, एल्गोरिदमिक प्रभुत्व और अत्यधिक जोखिम इसकी त्रासदी के कारण हैं। दीर्घकालिक निवेशक के लिए F&O प्रवेश आत्मघाती है। SIP और म्यूचुअल फंड ही सुरक्षित संपत्ति निर्माण का मार्ग है। यह अध्ययन F&O से दूर रहने की स्पष्ट चेतावनी देता है।

यथार्थवादी प्रतिफल की अपेक्षा और धोखाधड़ी से सतर्कता-

निवेश की दुनिया में सबसे बड़ा जोखिम अवास्तविक उम्मीदें रखना है। दीर्घकाल में ऐतिहासिक रूप से यथार्थवादी प्रतिफल लगभग इस दायरे में रहे हैं—इक्विटी में 10–12 प्रतिशत, ऋण साधनों में 6–7 प्रतिशत और संतुलित पोर्टफोलियो में 8–10 प्रतिशत। इससे कहीं अधिक, विशेषकर 15 प्रतिशत या उससे ऊपर के "गारंटीकृत" प्रतिफल के वादे प्रायः निवेश नहीं, बल्कि धोखाधड़ी या पोंजी योजनाओं के संकेत होते हैं।

ऐसी योजनाएँ अक्सर "कम समय में पैसा दोगुना", "जोखिम शून्य", "इनसाइड जानकारी", "एक्सक्लूसिव ऑफर" या "सीमित समय के लिए अवसर" जैसे आकर्षक नारों से निवेशकों को

लुभाती हैं। वास्तविकता यह है कि इन योजनाओं में पुराने निवेशकों को भुगतान नए निवेशकों के पैसों से किया जाता है; जैसे ही नया पैसा आना बंद होता है, पूरा ढाँचा ढह जाता है। हाल के वर्षों में सामने आए बड़े घोटाले इस बात का उदाहरण है कि आकर्षक वादों के पीछे कितना बड़ा जोखिम छिपा हो सकता है।

इसी तरह, क्रिप्टोकरेंसी को भी कई बार "नए युग का निवेश" बताकर प्रचारित किया जाता है, जबकि अधिकांश क्रिप्टो परिसंपत्तियाँ किसी ठोस नकदी प्रवाह, उत्पादक संपत्ति या आंतरिक मूल्य पर आधारित नहीं हैं। इनकी कीमतें मुख्यतः मानवीय हाइप और सट्टा भावना पर निर्भर करती हैं। ऐसे साधनों में होने वाले अत्यधिक मूल्य उतार–चढ़ाव उन खुदरा निवेशकों के लिए बहुत बड़ा जोखिम पैदा करते हैं, जिन्होंने यह पूँजी कड़ी मेहनत, समय और श्रम से अर्जित की होती है।

इसलिए निवेश से पहले यह अनिवार्य है कि नियामकीय वैधता की जाँच की जाए—क्या उत्पाद SEBI के अंतर्गत पंजीकृत है, क्या म्यूचुअल फंड AMFI से मान्यता प्राप्त है, और क्या जानकारी पारदर्शी रूप से उपलब्ध है। निवेशक को यह समझना चाहिए कि उच्च प्रतिफल हमेशा उच्च जोखिम के साथ आता है, और "गारंटीड ऊँचा रिटर्न" अक्सर खतरे की घंटी होता है। समझदारी इसी में है कि लालच के बजाय अनुशासन, विविधीकरण और दीर्घकालिक दृष्टि को निवेश का आधार बनाया जाए।

बीमा: अनिश्चितताओं के विरुद्ध सुरक्षा कवच-

जहाँ बचत और निवेश भविष्य की समृद्धि के साधन हैं, वहीं बीमा जीवन की अनिश्चितताओं से सुरक्षा प्रदान करने का माध्यम है। बीमा का उद्देश्य धन बढ़ाना नहीं, बल्कि आकस्मिक और बड़े वित्तीय झटकों से परिवार को बचाना होता है। इसी कारण यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि बीमा और निवेश के उद्देश्य अलग–अलग हैं और इन्हें अलग ही रखा जाना चाहिए।

जीवन बीमा (Life Insurance) का मूल उद्देश्य कमाने वाले व्यक्ति की असमय मृत्यु की स्थिति में उसके आश्रितों को वित्तीय सुरक्षा देना है। इस दृष्टि से शुद्ध टर्म लाइफ इंश्योरेंस सबसे उपयुक्त और प्रभावी विकल्प माना जाता है। टर्म बीमा में केवल जोखिम कवर होता है, इसमें किसी प्रकार का रिटर्न नहीं मिलता—और यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। कम प्रीमियम में अधिक कवर उपलब्ध होने से परिवार की आय, बच्चों की शिक्षा, गृह ऋण और दैनिक खर्च सुरक्षित रह सकते हैं। इसके विपरीत, रिटर्न वाले बीमा उत्पाद अक्सर महंगे होते हैं और न तो पर्याप्त बीमा सुरक्षा देते हैं, न ही निवेश के रूप में आकर्षक प्रतिफल।

स्वास्थ्य बीमा (Health Insurance) आज के समय में उतना ही आवश्यक हो गया है। चिकित्सा खर्च लगातार बढ़ रहे हैं और एक गंभीर बीमारी या दुर्घटना वर्षों की बचत को कुछ ही

दिनों में समाप्त कर सकती है। स्वास्थ्य बीमा अस्पताल में भर्ती, सर्जरी और उपचार से जुड़े खर्चों को कवर कर आर्थिक तनाव को कम करता है। यह सुनिश्चित करता है कि बीमारी के समय उपचार के निर्णय पैसों की कमी से प्रभावित न हों।

एक सुविचारित व्यक्तिगत वित्त योजना में यह सिद्धांत स्पष्ट होना चाहिए कि बीमा सुरक्षा के लिए है और निवेश संपत्ति निर्माण के लिए। निवेश से रिटर्न की अपेक्षा की जाती है, जबकि बीमा से मानसिक शांति और सुरक्षा मिलती है। जब दोनों को मिलाया जाता है, तो अक्सर दोनों ही अपने उद्देश्य में कमजोर पड़ जाते हैं। इसलिए समझदारी इसी में है कि पर्याप्त टर्म जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा लेकर जोखिम को कवर किया जाए, और संपत्ति निर्माण के लिए म्यूचुअल फंड, इंडेक्स फंड या अन्य निवेश साधनों का सहारा लिया जाए। यही संतुलन दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता की नींव रखता है।

स्पष्ट चेतावनी

यह लेख श्रम से अर्जित संपत्ति संरक्षण हेतु सामान्य जानकारी मात्र प्रदान करता है। प्रस्तुत विचार लेखक के व्यक्तिगत मत हैं, जो परिस्थितिजन्य रूप से गलत या अपूर्ण हो सकते हैं। यह निवेश सलाह, वित्तीय परामर्श या कानूनी मार्गदर्शन नहीं है। सभी निवेश निर्णय मान्यता प्राप्त पंजीकृत निवेश सलाहकार या विशेषज्ञ से परामर्श उपरांत ही लें। लेख के अनुपालन से उत्पन्न किसी भी वित्तीय हानि, कानूनी दायित्व, कर संबंधी परिणाम या अन्य दुष्परिणाम हेतु लेखक या प्रकाशक पूर्णतः अक्षुण्ण हैं। पाठक स्वयं जोखिम स्वीकार करते हुए निर्णय लें। वित्तीय निर्णय से पूर्व अपनी जोखिम वहन क्षमता, वित्तीय स्थिति, कर प्रभाव का आकलन करवाएँ।

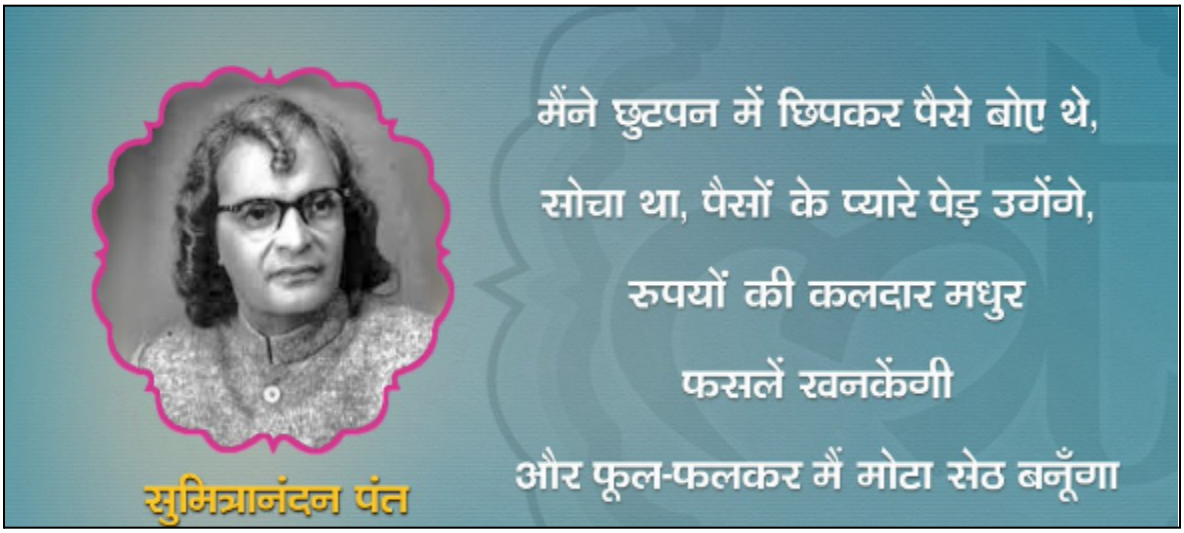

अनिल कुमार श्रीवास्तव
जनसम्पर्क अधिकारी
(सामान्य शाखा)
मो. 7318060012

आरेडिका की पर्यावरणीय जागरूकता और समाज पर उसका प्रभाव

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली: जहाँ रेल और पेड़ साथ-साथ बढ़ते हैं।

रायबरेली के लालगंज की ज़मीन पर कभी बंजर धरती फैली हुई थी—सूखी मिट्टी, असुरक्षित भूजल और हरियाली का नामोनिशान नहीं। कोई सोच भी नहीं सकता था कि यही वीरान ज़मीन एक दिन भारत के सबसे हरित औद्योगिक परिसर में बदल जाएगी। आज वहीं खड़ा है, आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली—जहाँ न सिर्फ़ रेल कोच और पहिये बनाए जाते हैं, बल्कि पेड़-पौधे पनपते हैं, पानी संजोया जाता है, और सूरज की रोशनी से ऊर्जा पैदा होती है।

कारखाने के भीतर कदम रखते ही लगता है मानो किसी उद्यान में प्रवेश कर गए हों। धुएँ की जगह ताज़ी हवा, मशीनों की गड़गड़ाहट की जगह चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई देती है। धूप में चमकते तालाब, छायादार वृक्षों से घिरी सड़कें और तितलियाँ—सब मिलकर वातावरण को जीवंत बना देते हैं।

“यह तो ऐसा लगता है जैसे किसी पार्क में ट्रेनें एवं पहिये बन रहे हों,” मैनें इन बदलावों को अपनी आँखों से देखा है।

शुरूआती चुनौतियाँ –

यह बदलाव संयोग नहीं, बल्कि दूरदृष्टि का परिणाम है। जब एमसीएफ स्थापित हुआ था, तब मिट्टी में खेती या वृक्षारोपण की कोई संभावना नहीं थी। **राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई)** की रिपोर्ट में मिट्टी का **पी.एच. स्तर 8.14 से 10.23** तक दर्ज किया गया—जबकि स्वस्थ मिट्टी के लिए यह **6 से 7.5** होना चाहिए। इतनी क्षारीय मिट्टी में पौधे जड़ ही नहीं पकड़ पाते।

भूजल की स्थिति भी भयावह थी—फ्लोराइड की मात्रा अधिक और **टीडीएस 1500–2000** के बीच, जो पीने योग्य नहीं था। अधिकांश वनस्पति एवं कृषि विशेषज्ञों का यह

कहना था कि यहाँ की भूमि पर पौधों का जीवित रहना संभव नहीं है। वनस्पतियों के नाम पर यहाँ पर कुछ बबूल और कटीली झाड़ियाँ थीं।

लेकिन हमारे पूर्व के वरिष्ठ अधिकारियों ने शुरू से ही इन चुनौतियों को स्वीकारा और आरेडिका को हरा भरा करने का प्रयास किया एवं वर्तमान **महाप्रबंधक श्री विवेक खरे** के नेतृत्व में एमसीएफ ने संकल्प लिया कि यह कारखाना केवल कोच एवं कोच के पहिये बनाने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह सिद्ध करेगा कि **उद्योग और पर्यावरण साथ-साथ आगे बढ़ सकते हैं।**

<u>बंजर ज़मीन से हरित पट्टी तक-</u>

मिट्टी को सुधरने के लिए **जिप्सम, वर्मी कम्पोस्ट** (जो कॉलोनी के कचरे से तैयार होता है) और **शोधन किए गए सीवेज जल से ड्रिप सिंचाई** का सहारा लिया गया। धीरे-धीरे मिट्टी ने जीवन को स्वीकारना शुरू किया। भूमि की उर्वरता में सुधार हेतु हजारों की संख्या में जमीन में छोटे-छोटे गड्ढे

खोदे गये, जिससे ऊपरी परत में सुधार हुआ।

- अब तक कुल **3.58 लाख पौधे लगाए जा चुके हैं।**
- केवल वर्ष 2025–26 (अगस्त तक) में ही **36,000 पौधे और 2.25 लाख बीज बोए गए।**
- **पाँच मियावाकी घने वन** लगभग **33,000 वर्ग फुट** क्षेत्र में विकसित किए गए।
- अब तक **91 हेक्टेयर बंजर भूमि** हरे-भरे पट्टों में बदल चुकी है।

आज एमसीएफ एक लघु पारिस्थितिकी तंत्र बन चुका है। यहाँ पक्षी घोंसले बनाते हैं, बच्चे पेड़ों की छाँव में साइकिल चलाते हैं और कर्मचारी कॉलोनी परिसर में सब्ज़ियाँ उगाते हैं। टाउनशिप में 56 उद्यान, एक हेरिटेज पार्क और एक इको ग्रीन (18 होल का गोल्फ कोर्स के साथ) है।

पिछले 3 वर्षों में आरेडिका में 3 लाख पौधे लगाये गये। वर्ष 2024–25 में आयोजित अभियान "एक पेड़ माँ के नाम" में ही 60,000 पौधे लगाए गए—हर पौधे के साथ एक भावनात्मक कहानी जुड़ी है।

<u>जल संरक्षण और प्रबंधन-</u>

आरेडिका ने जल संरक्षण को अपनी प्राथमिकताओं में सर्वोपरि स्थान दिया। पेड़ों ने एमसीएफ को हरित फेफड़े दिए, तो पानी ने जीवन। जो ज़मीन कभी असुरक्षित भूजल से त्रस्त थी, आज वहीं **जल संरक्षण और रिचार्ज प्रणाली** खड़ी है, जिनका उद्देश्य है कि जितना जल हम भूमि से दोहन करें उतना धरती को वापस लौटा सकें।

- वित्त वर्ष 2024–25 तक एमसीएफ ने **631 मिलियन लीटर पानी के पुनर्भरण की क्षमता** विकसित की।
- वर्षा के अतिरिक्त जल को बहने से बचाने के लिए मथना नाले के पानी को नये बने तालाब में डायवर्ट किया गया।

- 2025–26 में आरेडिका की कुल पानी संरक्षण की छमता **100 मिलियन लीटर** से बढ़कर कुल 750मिलियन लीटर हो गयी।
- **29 रेन वाटर हार्वेष्टिंग, 35 रिचार्ज बोरवेल** और **15 तालाब** इस काम में सहयोग कर रहे हैं।

सबसे अभिनव उपाय था **तालाबों के किनारे बिना ईंट-सीमेंट के रिचार्ज बोर बनाना**। इसने अकेले ही **93 मिलियन लीटर प्रति वर्ष** जल पुनर्भरण क्षमता जोड़ी। साथ ही, **मथना नाले का 67 मिलियन लीटर वर्षा जल** नए बने तालाबों में मोड़ा गया, जो पहले बेकार बह जाता था।

आज **इको पार्क तालाब** टाउनशिप का प्रिय स्थल है। बच्चे इसके किनारे खेलते हैं और भूजल फिर से जीवित होने लगा है।

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप भूजल का TDS घटकर 300–350 तक आ गया है, जिससे आसपास के गाँवों को भी शुद्ध जल उपलब्ध हो रहा है।

हरित ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता-

पानी ने ज़मीन को जीवन दिया, तो सूरज ने ऊर्जा।

- **5.13 मेगावाट क्षमता का सौर उर्जा प्लांट-**

एमसीएफ में वर्ष 2013-14 में 2 मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र लगाकर चालू किया गया था, जिसमें वर्ष 2017 में 1 मेगावाट का अतिरिक्त संयंत्र लगाकर क्षमता 3 मेगावाट किया गया। वर्ष 2023 में इसमें 0.13 मेगावाट की बढ़ोत्तरी कर कुल सौर ऊर्जा संयंत्र की क्षमता 3.13 मेगावाट की गयी। इसके साथ ही 2023 से 2026 में अभी तक 2 मेगावाट क्षमता का रूफ टॉप सोलर प्लांट लगाया गया, जिससे आरेडिका की कुल सौर ऊर्जा की क्षमता 5.13 मेगावाट की हो गई। यह संयंत्र ग्रिड से

सीधा जुड़ा हुआ है। इस संयंत्र ने अपने इंस्टालेशन से लेकर अब तक कुल 42 मिलियन यूनिट हरित ऊर्जा उत्पन्न की एवं उत्पन्न सौर ऊर्जा से लगभग रूपये 27.5 करोड़ की बचत हुई। आरेडिका का वार्षिक ऊर्जा खपत लगभग 16 लाख यूनिट है, जिसमें से लगभग 6 लाख यूनिट इस संयंत्र से पैदा की जा रही है, जो कि कुल खपत का लगभग 35% है। सौर ऊर्जा संयंत्र के विकास की गति यहीं नहीं थमी। आरेडिका में कारखाने के शेड की छतों पर एवं अन्य प्रशासनिक भवनों के छतों पर 14 मेगावाट का अतिरिक्त सोलर पैनल लगाकर सौर ऊर्जा उत्पादन करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसकी प्रक्रिया अंतिम चरण में है और 14 मेगावाट के रूफ टॉप सोलर प्लांट के चालू होने के बाद आरेडिका की कुल विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता पूरी तरह से सौर ऊर्जा से पूरी की जायेगी और यह आरेडिका के विकास में एक महत्वपूर्ण माइलस्टोन होगा।

- **<u>हाइवे इंडक्शन लैंप-</u>**

आरेडिका की कार्यशालाओं में अनुरक्षण मुक्त अच्छी गुणवत्ता के कम ऊर्जा खपत वाले हाईवे इंडक्शन लैंप लगाये गये, जिसकी औसत आयु 1 लाख घंटे है। इस प्रकार के लगभग 2000 लैंप स्थापित किये गये हैं। इनसे दिन में सूर्य की रोशनी पर्याप्त मात्रा में शॉप में मिलती है एवं लगभग 15 लाख यूनिट प्रतिवर्ष बिजली का बचत करते हैं।

- 600+ ऑक्यूपेंसी सेंसर और 2000 से अधिक BLDC Fans लगाए गए, जिनसे बिजली की खपत में कमी आयी।

इन प्रयासों ने एमसीएफ को **ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2024** और **आईएसओ 50001:2018 प्रमाणन** दिलाया।

<u>शून्य कचरा, स्वच्छ हवा-</u>

एमसीएफ की **घर-घर कचरा संग्रह व्यवस्था** ठोस अपशिष्ट को सीधे **वर्मी कम्पोस्ट प्लांट** तक पहुँचाती है। यहाँ से हर **साल 30 टन खाद** तैयार होती है, जो उद्यानों में उपयोग होती है। इन प्रयासों से हर साल **8,000 टन CO_2 उत्सर्जन कम होता है।**

वायु की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है:

- **AQI: 12 (अच्छा)**
- **CO_2: 421.45 ppm**
- **NO_2: 13.08 $\mu g/m^3$**
- **O_3: 100.79 $\mu g/m^3$**

भारत में बहुत कम औद्योगिक परिसर इतने स्वच्छ वातावरण का दावा कर सकते हैं।

समाज पर सकारात्मक प्रभाव-

आरेडिका की पर्यावरणीय पहलों का प्रभाव केवल इसके परिसर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आसपास के समाज और समुदाय तक गहराई से पहुँचा।

1. भूजल स्तर के लेवल में बढ़ोत्तरी –

आरेडिका द्वारा किये गये जल संरक्षण का असर सिर्फ यहाँ की चहारदिवारी तक सीमित नहीं है, आस-पास के कई लोगों से मेरी बातचीत में मैंने यह सुना कि भूजल के स्तर में पिछले कुछ वर्षों में बढ़ोत्तरी हुई है।

2. जल उपलब्धता और स्वास्थ्य सुधार-

- शुद्ध जल की उपलब्धता ने स्थानीय लोगों को राहत दी और जलजनित बीमारियों में कमी आई।
- भूजल के लेवल में वृद्धि से किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधा मिली, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।
- पेड़-पौधों की संख्या बढ़ने से इस क्षेत्र के वर्षा प्रतिरूप में बदलाव हुआ और पूर्व समय की तुलना में अधिक बरसात होने लगी।

3. **स्वच्छ और प्रदूषणमुक्त वातावरण-**
   - वृक्षारोपण और हरित पट्टियों से वायु प्रदूषण घटा।
   - आसपास के गाँवों और बस्तियों को स्वच्छ वायु और स्वस्थ जीवन मिला।
   - वातावरण प्रभावों का अनुभव हम इस तरह बयाँ कर सकते हैं कि जब हम कहीं बाहर से आते हैं तो एमसीएफ परिसर एवं इसके आस-पास पहुँचने पर ही हवा की शीतलता हमें महसूस होती है। यह आरेडिका के पर्यावरणीय सुधारों का परिणाम है, तथा इसका लाभ केवल एमसीएफ तक सीमित नहीं रहता, अपितु आस-पास के समाज को भी मिलता है।
4. **जैव विविधता और पारिस्थितिकीय संतुलन-**
   - पक्षियों, तितलियों और छोटे जीव-जंतुओं की वापसी ने प्राकृतिक संतुलन को पुनर्जीवित किया।

   - आज आरेडिका तथा इसके चारों ओर विभिन्न प्रकार के पक्षी उड़ते हुए दिखाई देते हैं, तथा अब ये उनका नया आशियाना बन गया है।
   - बच्चों और युवाओं को प्रत्यक्ष अनुभव से पर्यावरणीय शिक्षा मिली।

5. **सामुदायिक जीवन और मनोरंजन-**
   - परिसर में **बच्चों के पार्क, इको-पार्क और जॉगर्स पार्क** स्थापित किए गए।

- ये न केवल कर्मचारियों बल्कि आसपास के निवासियों के लिए भी स्वास्थ्य और मनोरंजन के प्रमुख केंद्र बने।

- आरेडिका द्वारा ग्राम चौपाल के माध्यम से क्षेत्रीय लोगों को उनके स्वास्थ्य, पर्यावरण सुधार, जल संरक्षण, सरकारी नीतियों आदि के संबंध में जागरूकता प्रदान की जाती है।

6. **शिक्षा और प्रेरणा का स्रोत-**

- स्थानीय विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्र आरेडिका के पर्यावरणीय प्रयासों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं।
- इसने यह सिखाया है कि उद्योग और प्रकृति का संतुलन भविष्य की अनिवार्यता है।

7. **आर्थिक और सामाजिक स्थिरता-**

- जल संरक्षण और हरित प्रयासों ने स्थानीय कृषि और जीवन गुणवत्ता दोनों को मजबूत किया।
- रोजगार के नए अवसरों और हरित जागरूकता ने क्षेत्रीय विकास को गति दी।
- आरेडिका के आस-पास के लोगों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पहले की तुलना में बेहतर हुआ।
- आरेडिका में कोच के निर्माण हेतु नई-नई सहायक इकाइयाँ स्थापित हो गई हैं, जिनसे लोगों को रोजगार मिला, व्यापार के नये-नये आयाम विकसित हुए। इससे समाज में आर्थिक और सामाजिक स्थिरता बढ़ी।

8. **पर्यावरण संरक्षण की संस्कृति का विकास-** आरेडिका के वृक्षारोपण से प्रभावित होकर रायबरेली के वन विभाग द्वारा बाल्हेश्वर मंदिर एवं इसके आस–पास के क्षेत्रों में बहुतायत संख्या में पौधों का वितरण किया गया है, तथा लोग वृक्षारोपण के प्रति जागरूक हुए। इसके लिए आरेडिका प्रेरणा का श्रोत है।

कोच एवं व्हील से आगे की कहानी-

आरेडिका न सिर्फ रेल के डिब्बे बना रहा है, अपितु एक हरित धरोहर गढ़ रहा है। बंजर ज़मीन से हरे-भरे वन तक, फ्लोराइडयुक्त जल से चमकते तालाब तक, भारी बिजली बिलों से सौर आत्मनिर्भरता तक, एमसीएफ रायबरेली ने यह साबित कर दिया है कि **एक कारखाना सिर्फ़ उत्पादन का नहीं, बल्कि पर्यावरणीय परिवर्तन का केंद्र भी हो सकता है।**

यह अब केवल एक उत्पादन इकाई नहीं है, यह एक जीवंत उदाहरण है सतत् उद्योग का, जहाँ ट्रेनें उसी देखभाल से बनती हैं, जैसे पेड़ लगाए जाते हैं, पानी बचाया जाता है और हवा स्वच्छ रखी जाती है।

रायबरेली के हृदय में, एमसीएफ ने साबित कर दिया है कि प्रगति और प्रकृति साथ-साथ बढ़ सकते हैं और खिल सकते हैं।

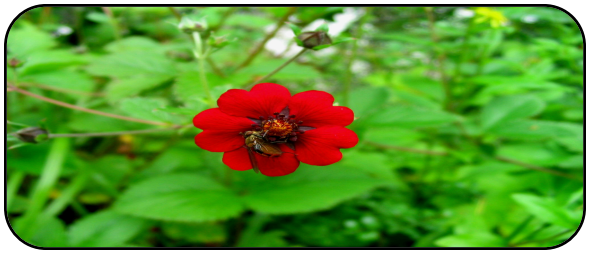

मधु तिवारी
पत्नी श्री मोहित तिवारी
उप मुख्य यांत्रिक अभि.
(यांत्रिक विभाग)
मो. 7318060420

बेटी का आसमान

वो नन्हीं-सी जान... तीन साल की हुई है,
मेरी थकान देख, मुस्काकर पास चली आती है।
खिलौनों की नल से पानी भर-भर लाती है,
जैसे मेरे मन की प्यास वही बुझा जाती है।

मैं हैरान हूँ... ये ध्यान कहाँ से लाती है?
इतनी छोटी-सी उम्र में, इतनी समझ दिखाती है।
कहते हैं बेटियाँ खुद ही समझदार हो जाती हैं,
पर कौन बताए—ये तो जन्म से ही सब जान जाती हैं।

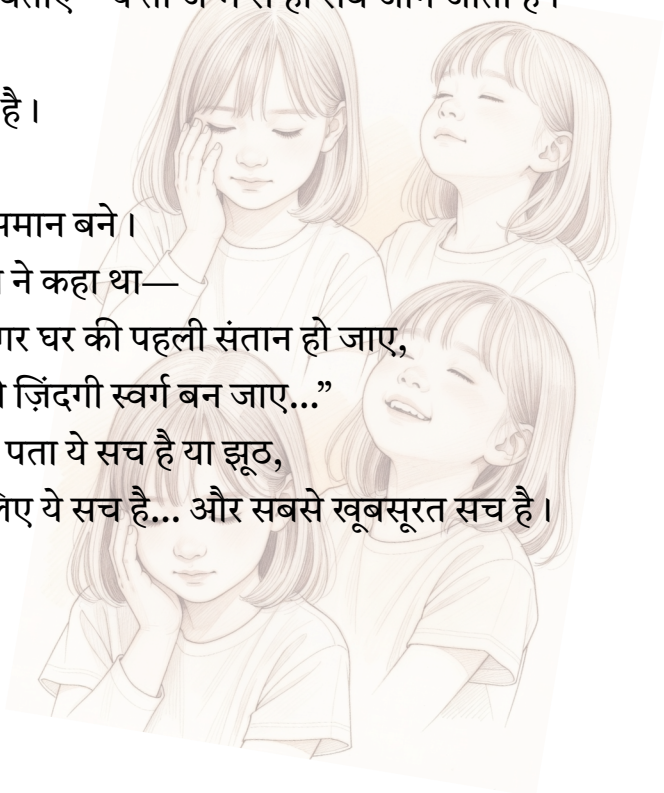

लोग कहते हैं—"लड़की तो लक्ष्मी का रूप है",
मैं कहती हूँ—वो तो प्रेम का सबसे सुंदर स्वरूप है।
बेटियों को बस बेटी ही रहने दो,
फिर उसकी मर्ज़ी—वो धरती पर चमके या आसमान बने।

मेरी सास ने कहा था—
"बेटी अगर घर की पहली संतान हो जाए,
तो माँ की ज़िंदगी स्वर्ग बन जाए..."
मुझे नहीं पता ये सच है या झूठ,
पर मेरे लिए ये सच है... और सबसे खूबसूरत सच है।

क्योंकि मेरी बेटी मेरे घर की रौनक है,
मेरे दिल की धड़कन, मेरे दिन की चमक है।
वो थोड़ी देर भी मुझसे दूर हो जाए,
तो घर खाली लगे... और मन बेचैन हो जाए।

धन्य हैं वो घर, जिनके आँगन में बेटियाँ हैं,
धन्य हैं वो पल, जिनमें उनकी खिलखिलाहटें हैं।
धन्य हैं वो माता-पिता, जो बेटियों का हाथ थामते हैं,
जो उम्र भर साथ निभाकर उन्हें आसमान तक पहुँचाते हैं।

बेटियों पर कविताएँ तो बहुत लिखी जाती हैं,
पर समझ... कम ही लोगों को आती हैं।
एक बार बिना वजह,
बस प्यार से उसके सिर पर हाथ रखकर देखो—
नन्हीं-सी परी भी छोटे-से घर को महल बना देती है,
और थके हुए माँ-बाप की आँखों में
फिर से रोशनी जगा देती है।

मैं बेटा-बेटी में भेद नहीं करती,
मैं बस उन्हें समझाती हूँ—
जो बेटी के जन्म पर अफसोस करते हैं।
क्योंकि बेटियाँ बोझ नहीं होतीं,
बेटियाँ तो दुआ होती हैं...
जो हर घर को "जन्नत" बना देती हैं।

ओम शंकर झा
कार्यालय अधीक्षक
(नियोजन विभाग)
मो. 8853556638

मनचला शब्दकार हूँ मैं

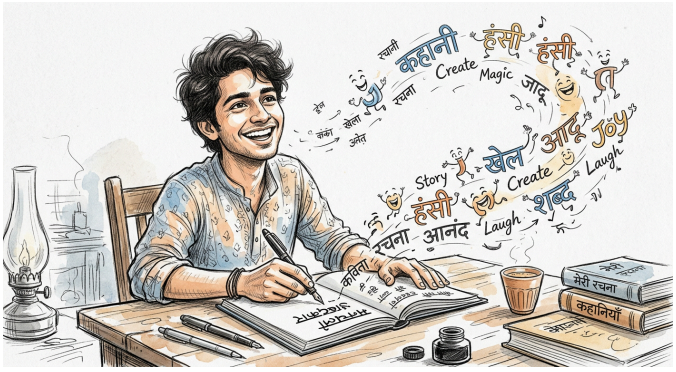

एक मनचला शब्दकार हूँ मैं
शब्दों से रचता संसार हूँ मैं
दिनकर सदृश व्यवहार हूँ मैं
प्रेमचंद समरूप विचार हूँ मैं

लेखनी जो मेरी मचलने लगती है
मजबूत शिलाएं भी हिलने लगती है
दिव्यांगों की लाठी चलने लगती है
हिमाद्रि ग्लेशियर पिघलने लगती है

एक मनचला शब्दकार हूँ मैं
शब्दों से रचता संसार हूँ मैं

सभागार की दीवारें दरक जाती है
खामोश सिंधु भी थिरक जाती है
क्षिति[1] में तीक्ष्ण कंपन हो जाता है
क्षितिज में भीषण स्पंदन हो जाता है

एक मनचला शब्दकार हूँ मैं
शब्दों से रचता संसार हूँ मैं

गिरिराज भी बहुधा काँप लेता है
कापुरुष[2] अपना डगर नाप लेता है
अधम मेरी मंशा जो भाँप लेता है
भीरूता का राग शीघ्र अलाप लेता है

एक मनचला शब्दकार हूँ मैं
शब्दों से रचता संसार हूँ मैं
दिनकर सदृश व्यवहार हूँ मैं
प्रेमचंद समरूप विचार हूँ मैं

पर प्रणय का सदा ही कायल हूँ मैं
संवेदना सम्मुख सतत घायल हूँ मैं
रुक्मिणी की खनकती पायल हूँ मैं
"रेणु" की 'मैला आँचल' हूँ मैं

एक मनचला शब्दकार हूँ मैं
शब्दों से रचता संसार हूँ मैं

उर[3] तल से निश्चय ही कोमल हूँ मैं
बृहतकाय तरु[4] का स्निग्ध[5] कोंपल[6] हूँ मैं
मीरा के अधरों का मधुर हलाहल हूँ मैं
पावन काशी का कल-कल गंगाजल हूँ मैं

एक मनचला शब्दकार हूँ मैं
शब्दों से रचता संसार हूँ मैं।

कठिन शब्दार्थ: 1 क्षिति = पृथ्वी, 2 कापुरूष = डरपोक, 3 उर = हृदय, 4 तरु = वृक्ष, 5 स्निग्ध = कोमल, 6 कोंपल = पत्ती।

मैं घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ ।	मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा ।	जब किसी ढब से निकल तिनका गया ।
एक दिन जब था मुण्डेरे पर खड़ा ।	लाल होकर आँख भी दुखने लगी ।	तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए ।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ ।	मूँठ देने लोग कपड़े की लगे ।	ऐंठता तू किसलिए इतना रहा ।
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा ।1।	ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी ।2।	एक तिनका है बहुत तेरे लिए ।3।

एक तिनका / अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जितेन्द्र कुमार
वरि. आशुलिपिक
(राजभाषा विभाग)
मो. 7007400470

मानव व्यवहार

मानव व्यवहार मनुष्य के व्यक्तित्व, अनुभव, परिवेश और सामाजिक संरचना का सम्मिलित परिणाम है। यह केवल बाहरी क्रियाओं तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसके भीतर विचार, भावनाएँ, इच्छाएँ, मूल्य और विश्वास भी सक्रिय रहते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए उसका व्यवहार अकेले में नहीं, बल्कि समाज के संदर्भ में विकसित होता है। परिवार, शिक्षा, संस्कृति, परंपरा और परिवेश उसके आचरण को दिशा प्रदान करते हैं। यही कारण है कि अलग-अलग समाजों और संस्कृतियों में व्यवहार के स्वरूप में भिन्नता दिखाई देती है।

मानव व्यवहार का आधार उसकी मनोवैज्ञानिक संरचना में निहित है। व्यक्ति की आवश्यकताएँ, इच्छाएँ और प्रेरणाएँ उसके व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जब किसी व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएँ—जैसे भोजन, सुरक्षा और प्रेम—पूरी होती हैं, तो उसका व्यवहार संतुलित और सकारात्मक होता है। इसके विपरीत, अभाव और असुरक्षा की स्थिति में व्यवहार में आक्रोश, भय या असंतुलन देखा जा सकता है। इस दृष्टि से व्यवहार व्यक्ति की आंतरिक अवस्था का दर्पण होता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो मानव व्यवहार सामाजिक मानदंडों और मूल्यों से संचालित होता है। समाज अपने सदस्यों के लिए कुछ नियम और अपेक्षाएँ निर्धारित करता है। इन नियमों के अनुरूप चलने वाला व्यक्ति सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करता है, जबकि इनके उल्लंघन पर उसे आलोचना या दंड का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार समाज व्यक्ति के व्यवहार

को नियंत्रित और संतुलित करने का कार्य करता है। शिक्षा और संस्कार इस नियंत्रण को सुदृढ़ बनाते हैं और व्यक्ति को नैतिकता की ओर उन्मुख करते हैं।

आधुनिक युग में तकनीकी विकास और वैश्वीकरण ने मानव व्यवहार में व्यापक परिवर्तन किए हैं। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव ने संचार की शैली को बदला है। जहाँ एक ओर इससे विचारों का आदान-प्रदान सरल हुआ है, वहीं दूसरी ओर आभासी संबंधों की वृद्धि ने वास्तविक मानवीय संबंधों को प्रभावित किया है। प्रतिस्पर्धा और भौतिकता की प्रवृत्ति ने व्यवहार में अधीरता और स्वार्थपरता को भी बढ़ाया है। फिर भी, सहानुभूति, सहयोग और करुणा जैसे मानवीय गुण आज भी समाज को सशक्त बनाए हुए हैं।

मानव व्यवहार में नैतिक मूल्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सत्य, अहिंसा, परोपकार और सहिष्णुता जैसे मूल्य व्यक्ति को उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करते हैं। जब व्यक्ति अपने व्यवहार में इन मूल्यों को अपनाता है, तो वह न केवल स्वयं का उत्थान करता है, बल्कि समाज के विकास में भी योगदान देता है। इसके विपरीत, जब व्यवहार में अनैतिकता और स्वार्थ हावी हो जाते हैं, तो सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगता है।

इसलिए मानव व्यवहार बहुआयामी और जटिल प्रक्रिया है, जिसमें जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तत्वों का समन्वय होता है। यह स्थिर नहीं, बल्कि परिवर्तनीय है और परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। यदि व्यक्ति आत्मचिंतन, संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में स्थान दे, तो उसका व्यवहार समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। मानव व्यवहार की यही विशेषता उसे अन्य प्राणियों से भिन्न और विशिष्ट बनाती है।

प्रियंका राणा
कनिष्ठ लिपिक
(कार्मिक विभाग)
मो. 6291792191

चूल्हे की आग और आँखों का पानी

बंगाल की वह मीठी खुशबू, यूपी की इस धूप-धूल में खो गई,
पापा की वह लाड़ली, न जाने कब इतनी बड़ी और समझदार हो गई।
दफ़्तर की थकान समेटे, जब सूने कमरे का ताला खोलती हूँ,
दीवारों की चुप्पी चुभती है, जब मैं खुद से ही बातें बोलती हूँ।

घर के उस शोर से, इस गहरे सन्नाटे तक का सफ़र कितना भारी है,
मम्मी के हाथ का स्वाद नहीं अब, यहाँ खुद के ही हाथों की बारी है।
भाई की वह नोक-झोंक, माँ की वह गरम रोटियों वाली थाली,
अब बस यादों के बक्से में है, यहाँ तो हर शाम लगती है खाली।

थक कर चूर होती हूँ, पर खुद को रोने की इजाज़त नहीं देती,
चूल्हा जलाना है अभी, ये ज़िम्मेदारी मुझे टूटने की मोहलत नहीं देती।
अजीब कशमकश है, फोन की घंटी बजते ही आवाज़ बदल लेती हूँ,
"मैं ठीक हूँ माँ", कहकर अपने बहते आँसुओं को निगल लेती हूँ।

रात को नींद नहीं आती, बस पुरानी यादें ज़हन को डसती हैं,
वे गलियाँ, वे यार-दोस्त, अब यादों के शहर में ही बसती हैं।
यहाँ तो चेहरे पर एक दिखावटी मुस्कान का नकाब सजा रखा है,
बंगाल की मिठास को मैंने, एक फीकी हंसी में दबा रखा है।

कभी-कभी अकेले में खुद पर हँस देती हूँ, अपनी इस हालत पर,
कि कल तक जो ज़िद पर अड़ती थी, आज लड़ रही है किस्मत पर।
रोते-रोते फिर सोचती हूँ, कि राहें भले ही अनजान और वीरान हैं,
पर हार नहीं मानूँगी, क्योंकि मेरे पीछे मेरे माँ-बाप का स्वाभिमान है।
खुद से ही रोज़ लड़ रही हूँ, कि एक दिन लौट कर घर जाऊँगी,
पर फिलहाल, इस अकेलेपन को ही अपनी सबसे बड़ी ताक़त बनाऊँगी।

शाबरा बेगम
वरि. आशुलिपिक
(गुणवत्ता विभाग)
मो. 9910479686

एक दिन बिना मोबाइल के

आज के समय में मोबाइल फोन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। सुबह आँख खुलते ही सबसे पहले हम मोबाइल देखते हैं, और रात को सोने से पहले भी आखिरी बार उसी की स्क्रीन पर नज़र डालते हैं। ऐसा लगता है मानो मोबाइल के बिना जीवन अधूरा हो। लेकिन क्या कभी हमने यह सोचा है कि यदि एक दिन भी मोबाइल के बिना बिताना पड़े तो कैसा अनुभव होगा? यह विचार ही कई लोगों को बेचैन कर सकता है। फिर भी, मैंने एक दिन बिना मोबाइल के बिताने का निश्चय किया। यह अनुभव मेरे लिए आत्मचिंतन, सुकून और वास्तविक जीवन से जुड़ने का अवसर बन गया।

सुबह की शुरुआत-

उस दिन मैंने जानबूझकर अपना मोबाइल बंद करके अलमारी में रख दिया। सामान्यतः मेरी सुबह

मोबाइल के अलार्म से होती है, पर उस दिन मैंने एक साधारण घड़ी का सहारा लिया। जब नींद खुली तो आदतन हाथ मोबाइल की ओर बढ़ी, लेकिन तुरंत याद आया कि आज मोबाइल का उपयोग नहीं करना है, शुरुआत में थोड़ी असहजता महसूस हुई। ऐसा लगा जैसे कुछ छूट गया हो, लेकिन जब मैं बालकनी में गयी और ताजी हवा का आनंद लिया, तो महसूस हुआ कि कितने दिनों बाद मैंने बिना किसी व्यवधान के सूर्योदय देखा है। पक्षियों की चहचहाहट, हल्की ठंडी हवा और आसमान का बदलता रंग—ये सब अनुभव इतने सजीव लगे कि लगा जैसे मैं प्रकृति के अधिक करीब आ गयी हूँ। मोबाइल के बिना सुबह अधिक शांत और सुकूनभरी लगी।

परिवार के साथ समय-

आमतौर पर नाश्ते के समय भी हम सबके हाथ में मोबाइल होता है। कोई समाचार पढ़ रहा होता है, कोई सोशल मीडिया देख रहा होता है। उस दिन मैंने तय किया कि पूरा समय परिवार के साथ

बिताऊँगी। नाश्ते की मेज पर हमने खुलकर बातचीत की। माँ ने बचपन की कुछ यादें साझा कीं, पिताजी ने अपने पुराने दिनों के किस्से सुनाए और हम सबने मिलकर हँसी-मजाक किया, मुझे एहसास हुआ कि मोबाइल ने हमें एक-दूसरे से थोड़ा दूर कर दिया है। हम साथ बैठते तो हैं, पर मन कहीं और भटकता रहता है। उस दिन बिना मोबाइल के बातचीत अधिक गहरी और आत्मीय लगी, ऐसा लगा जैसे रिश्तों में नई ताजगी आ गई हो।

पढ़ाई और काम पर ध्यान-

मोबाइल अक्सर पढ़ाई और काम के बीच सबसे बड़ा व्यवधान बन जाता है। एक नोटिफिकेशन आया नहीं कि ध्यान भटक गया। उस दिन जब मैं पढ़ने बैठी, तो किसी संदेश या कॉल की चिंता नहीं थी। पूरा ध्यान किताब पर था। मैंने कई घंटों तक लगातार पढ़ाई की और पाया कि मेरी एकाग्रता पहले से कहीं अधिक बेहतर है। बिना मोबाइल के दिमाग अधिक शांत था। काम भी जल्दी और बेहतर तरीके से पूरा हुआ। यह अनुभव मेरे लिए प्रेरणादायक था कि यदि हम चाहें तो अपनी उत्पादकता कई गुना बढ़ा सकते हैं।

बाहर की दुनिया से जुड़ाव-

दोपहर के समय मैं पास के पार्क में टहलने चली गयी। सामान्यतः चलते समय भी लोग मोबाइल पर बात करते या गाने सुनते नजर आते हैं। लेकिन उस दिन मैंने सिर्फ अपने आसपास की दुनिया को महसूस किया। बच्चों को खेलते देखना, बुजुर्गों को हँसते हुए बातचीत करते देखना, पेड़ों की हरियाली को निहारना—ये सब अनुभव बहुत सुकून देने वाले थे। मैंने कुछ लोगों से सीधे बात भी की। एक बुजुर्ग व्यक्ति से बातचीत हुई, जिन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को साझा किया। यदि मेरे हाथ में मोबाइल होता, तो शायद मैं यह बातचीत कभी न कर पाती। उस दिन समझ में आया कि असली दुनिया कितनी खूबसूरत है।

रचनात्मकता में वृद्धि-

मोबाइल से दूर रहने का एक बड़ा लाभ यह भी हुआ कि मेरे भीतर की रचनात्मकता जाग उठी। मैंने डायरी में अपने विचार लिखे, कुछ चित्र बनाए और एक छोटी कविता भी लिखी। जब हम लगातार स्क्रीन देखते रहते हैं, तो हमारा दिमाग बाहरी जानकारी से भर जाता है। लेकिन जब हम थोड़ी देर के लिए शांत बैठते हैं, तो हमारे भीतर से नए विचार जन्म लेते हैं। बिना मोबाइल के समय बिताने से मुझे स्वयं के साथ जुड़ने का अवसर मिला।

शाम का अनुभव-

शाम को सामान्यतः मैं सोशल मीडिया पर समय व्यतीत करती हूँ या वीडियो देखती हूँ। लेकिन उस दिन मैंने परिवार के साथ कैरमबोर्ड खेला। हम सबने मिलकर चाय पी और पुराने गाने सुने। बातचीत और हँसी का माहौल था। रात को जब मैं सोने गयी, तो मन में एक अजीब-सी शांति थी। कोई नोटिफिकेशन देखने की जल्दी नहीं थी, न ही किसी संदेश का इंतजार था, नींद भी जल्दी और गहरी आई। एक दिन बिना मोबाइल के बिताना मेरे लिए एक अनोखा अनुभव रहा। शुरुआत में थोड़ी बेचैनी हुई, लेकिन धीरे-धीरे मन शांत होता गया। मैंने महसूस किया कि मोबाइल हमारे जीवन का एक उपयोगी साधन है, लेकिन उस पर अत्यधिक निर्भरता हमें वास्तविक जीवन से दूर कर सकती है। मोबाइल ने हमें सुविधा दी है, लेकिन साथ ही हमारी एकाग्रता, रिश्तों और मानसिक शांति को भी प्रभावित किया है। यदि हम समय-समय पर मोबाइल से दूरी बनाकर अपने परिवार, प्रकृति और स्वयं के साथ समय बिताएँ, तो जीवन अधिक संतुलित और सुखद बन सकता है। इस एक दिन ने मुझे सिखाया कि असली खुशी स्क्रीन में नहीं, बल्कि हमारे आसपास की दुनिया में छिपी है। कभी-कभी डिजिटल दुनिया से बाहर निकलकर वास्तविक जीवन को महसूस करना आवश्यक है। अंततः, **मोबाइल हमारे लिए है, हम मोबाइल के लिए नहीं**। इसलिए हमें उसका उपयोग संतुलित रूप से करना चाहिए। यदि हम सप्ताह में एक दिन भी बिना मोबाइल के बिताने का प्रयास करें, तो शायद हम अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव महसूस कर सकें।

सुबह ने खिड़की से झाँक कर धीरे से मेरा नाम पुकारा, ना कोई नोटिफ़िकेशन बजा, ना स्क्रीन ने मुझको सँवारा।	चाय की भाप में उठती खुशबू, अख़बार की सरसराहट थी, चिड़ियों की मीठी बातों में जीवन की सच्ची आहट थी।
घड़ी की टिक-टिक संग बैठी, समय से बातें करती रही बिन फ़िल्टर की दुनिया देखी, हर रंग में खुद को भरती रही।	शाम ढली तो मन ने सोचा, कैसी यह मीठी आज़ादी है— एक दिन मोबाइल के बिना, जैसे दिल की खुद से मुलाक़ात हुई है।

विनोद कुमार मौर्य
वरिष्ठ अनुभाग अभियंता
(यांत्रिक विभाग)
मो. 7318060451

माँ तुम कुछ नहीं जानती (कविता)

बुढ़ापे में माँ को एक ही बात सुनने को मिलती,
तुम्हारी सोच हुई अब पुरानी,
तुम दुनिया को नहीं पहचानती,
माँ तुम कुछ नहीं जानती।

लबों पे जिसके कभी,
बद्दुआ नहीं होती।
बस एक ही माँ है जो,
कभी खफ़ा नहीं होती।
फिर न जाने लोग क्यों कह देते?
माँ तुम कुछ नहीं जानती।

माँ भले ही पढ़ी-लिखी न हो,
हमारी जिंदगी का स्वर्ग वही है बनाती।
कितना भी तू मन्नत खुदा से मांग ले,
लेकिन जन्नत माँ से ही है मिलती।
फिर क्यों अनदेखा करके कहते?
माँ तुम कुछ नहीं जानती।

घर को जिसने घर बनाया,
उसी घर को बँटते देखा।
भाई-भाई को लड़ते देखा,
जब माँ कुछ बोलने को होती।
तो यही सुनने को मिलता,
माँ तुम कुछ नहीं जानती।

बूढ़ी माँ हमेशा इसी सोच में रहती,
अपने में कमियां ढूंढती रहती।
शायद मेरी कोई जरूरत नहीं होगी,
शायद इसीलिए वह चुप रहती।
मेरी सबसे विनती है, कभी ये न कहना,
माँ तुम कुछ नहीं जानती।

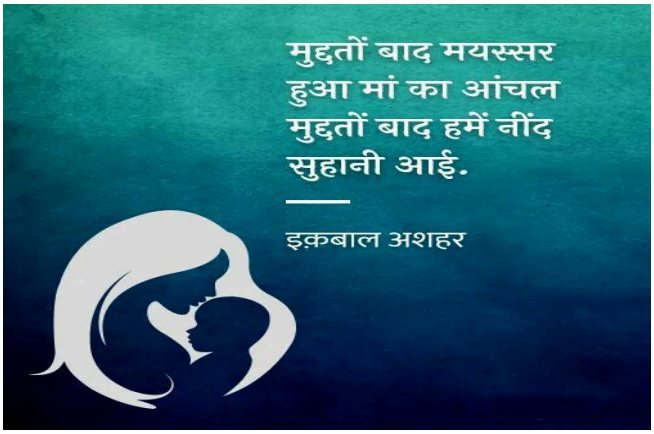

अंग्रेजी	**हिंदी**
Draft circular put up for signature	परिपत्र का मसौदा हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत है।
Get clarification of the staff concerned	संबंधित कर्मचारियों से स्पष्टीकरण माँगा जाए।
No such representation has been received.	इस तरह का कोई अभ्यावेदन प्राप्त नहीं हुआ है।
Early action please	कृपया शीघ्र कार्रवाई करें।
Early reply is solicited	शीघ्र उत्तर भेजने की प्रार्थना है।
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
Instructions have been issued	अनुदेश जारी कर दिए गए हैं।
Keeping in view	को ध्यान में रखते हुए।
Please expedite compliance	कृपया शीघ्र अनुपालन कीजिए।
May be obtained	प्राप्त किया जाय।
Retrospective effect	पूर्वव्यापी प्रभाव
Status quo	यथास्थिति

भावना
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
परियोजना
मो. 7405854559

नारी की महिमा

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च नारी शक्ति उनके अदम्य साहस, संघर्ष और समाज में उनके अतुलनीय योगदान को समर्पित-

हे नारी तुम सब पर भारी

तुम से ही चलती है

ये दुनिया सारी

तुम न समझो अपने को अबला और बेचारी

भगवान की तुम रचना हो अति प्यारी

हर फर्ज को तुम सदा अदा करती हो

समझ के अपना कर्तव्य और जिम्मेदारी

फर्ज हो चाहे जिस रूप में

बहन, बेटी, बहू, माँ को तुम

निभाती हो तुम समझ कर

हर पल अपनी जिम्मेदारी

हे नारी तुम सब पर भारी

जीवन के रंग तुम ही से रंगीन

तुम न हो तो हर घर लगता सूना और खाली

हे नारी तुम सब पर भारी

हर क्षेत्र में तुमने अपना परचम लहराया है

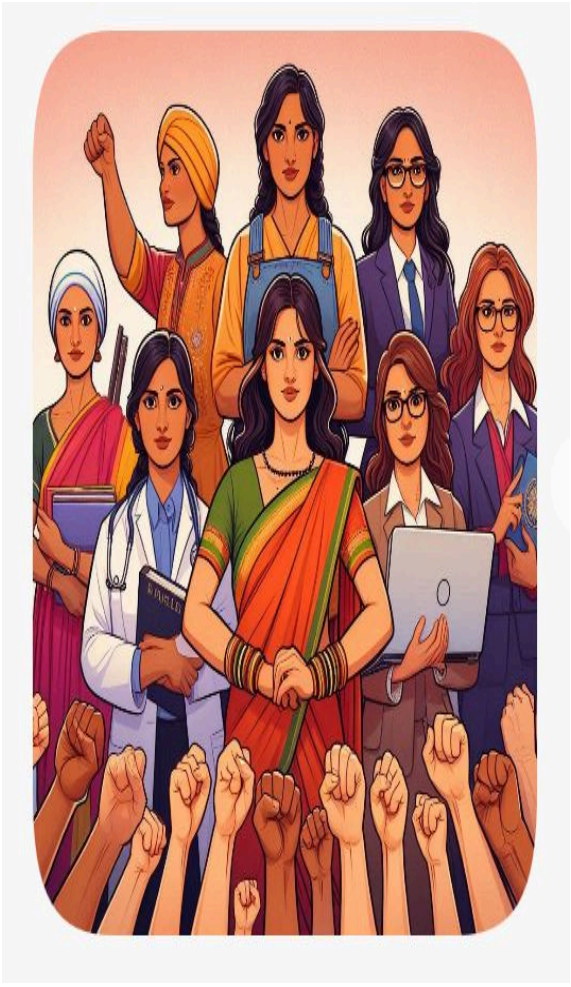

अंतरिक्ष में जाने वाली तुम ही हो प्रथम नारी (कल्पना चावला)

प्रथम ह्यूमन केल्कुलेटर से सम्मानित हो तुम नारी (शकुन्तला देवी)

भारत की पहली नारी जो माउन्ट ऐवरेस्ट पर दो बार चढ़ी (संतोष यादव)

ओलंपिक में प्रथम पदक से सम्मानित हो तुम नारी (कर्णम मल्लेश्वरी)

हर सफलता के पीछे तुमने ही तो की है सब तैयारी

हे नारी तुम सब पर भारी

दुर्गा तुम लक्ष्मी तुम ही तो हो काली

मत समझो तुम अपने को लाचार और बेचारी

तुम हो इस धरती पर हे हरियाली

तुम न हो सब बंजर है और सब खाली

संसार का हर दायित्व तुम ही पर है।

एक नये नव जीवन को धरती पर लाने वाली हो तुम नारी

हे नारी तुम सब पर भारी

ईश्वर की अनुपम और अनूठा स्वरुप हो तुम नारी

इतिहास रचने वाली धरती पर

विभिन्न रुप में अवतरित हुयी

सागर जैसी विशाल फैली

वो एक अद्भुत स्वरुप है नारी

हे नारी तुम सब पर भारी

हे नारी तुम सब पर भारी

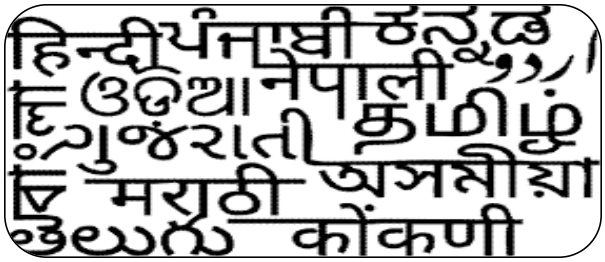

सीतेश कुमार शर्मा
तकनीशियन-I
ह्वील शॉप
मो. 8969110624

भारतीय भाषाएँ और हिंदी राजभाषा: भाषाई एकता की सशक्त धुरी

भारत विश्व के उन चुनिंदा देशों में है जहाँ भाषाई विविधता सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ न केवल संवाद का माध्यम हैं, बल्कि सभ्यता, परंपरा और लोकचेतना की जीवंत अभिव्यक्ति भी हैं। इस बहुभाषी परिदृश्य में हिंदी राजभाषा के रूप में भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली एक सशक्त कड़ी के रूप में स्थापित है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी करोड़ो लोगों की विचारवाहिनी भाषा है। भारत की आबादी का करीब आधा हिस्सा हिंदी भाषी है और वह आपसी संप्रेषण के लिए हिंदी का ही प्रयोग करता है।

शासन में, कानून बनाने, आदेश निकालने, अध्यादेश जारी करने, प्रतिवेदन, ज्ञापन, सूचना प्रसारित करने, लेखा-जोखा तैयार करने, व्यावसायिक काम करने, आदि के लिए जो भाषा अपनाई जाती है वस्तुतः उसी का नाम राजभाषा है।

भारतीय भाषाएँ: सांस्कृतिक चेतना की वाहक

भारतीय भाषाएँ—जैसे संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, ओड़िया, असमिया, उर्दू आदि—अपनी-अपनी साहित्यिक परंपराओं, दर्शन और लोकजीवन के अनुभवों से राष्ट्र की आत्मा को समृद्ध करती हैं। ये भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक स्मृति और सांस्कृतिक उत्तराधिकार की संवाहक हैं।

हिंदी: संपर्क, समन्वय और संप्रेषण की भाषा

हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इसका उद्देश्य किसी भाषा पर प्रभुत्व स्थापित करना नहीं, बल्कि प्रशासनिक कार्यों में सरल, सुलभ और सर्वग्राह्य संप्रेषण सुनिश्चित करना है। हिंदी ने समय के साथ अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द, भाव और संरचनाएँ ग्रहण कर एक समन्वयी स्वरूप विकसित किया है, जिससे यह अधिक समावेशी और व्यापक बनी है।

राजभाषा हिंदी और प्रशासन

राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग प्रशासन को जनसामान्य के निकट लाता है। जब सरकारी पत्राचार, अधिसूचनाएँ और नीतिगत दस्तावेज हिंदी में होते हैं, तो नागरिकों की भागीदारी और पारदर्शिता बढ़ती है। हिंदी का प्रयोग अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में भी सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि अनुवाद और शब्द-संवर्धन की प्रक्रिया से सभी भाषाएँ लाभान्वित होती हैं।

भारतीय भाषाएँ और हिंदी: विरोध नहीं, सहयोग

अक्सर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अनावश्यक विरोध की धारणा बनाई जाती है, जबकि वास्तविकता यह है कि हिंदी भारतीय भाषाओं की विरोधी नहीं, बल्कि उनकी सहयोगी है। हिंदी का विकास भारतीय भाषाओं के बिना अधूरा है और भारतीय भाषाओं की राष्ट्रीय पहचान हिंदी के माध्यम से और अधिक सुदृढ़ होती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य और भविष्य की दिशा

डिजिटल युग में भारतीय भाषाओं और हिंदी के लिए नए अवसर उपलब्ध हैं। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा, प्रशासन और तकनीक में हिंदी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं को समान अवसर दिए जाएँ।

भारतीय भाषाएँ हमारी जड़ों का प्रतीक हैं और हिंदी राजभाषा हमारी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति की धुरी। दोनों का संबंध प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व और समन्वय का है। जब भारतीय भाषाएँ सशक्त होंगी, तब हिंदी और अधिक समृद्ध होगी; और जब हिंदी प्रभावी होगी, तब भारतीय भाषाओं की राष्ट्रीय पहचान और व्यापक होगी। यही भाषाई एकता भारत की वास्तविक शक्ति है।

सौरभ सचान
दूरसंचार अनुरक्षक
(दूरसंचार विभाग)
मो. 9026043793

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'गोदान'

"हमारा जन्म इसलिए हुआ है कि हम अपना रक्त बहाये और बड़ों का घर भरें।"

ये वक्तव्य मुंशी प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास 'गोदान' में एक किसान होरी द्वारा दिया गया।

उपन्यास सम्राट द्वारा लिखित यह पंक्ति मेरे विवेकानुसार **'शोषण-आधारित'** व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है, जिसमें एक किसान का रीति-रिवाज़ों एवं सामाजिक व्यवस्था और परम्पराओं के नाम पर आजीवन शोषण होता रहता है।

इन व्यवस्थाओं की क्रूरता व पराकाष्ठा तो तब हो जाती है, जब होरी मर रहा होता है, तभी पण्डित दातादीन आते हैं और उसकी पत्नी धनिया को धर्म, स्वर्ग-नर्क, भूत-प्रेत का भय दिखाकर कहते हैं कि इसकी आत्मा को शांति तभी मिल पायेगी, जब इसके हाथ से 'गोदान' अर्थात् गाय का दान कराया जाये।

यदि इन व्यवस्थाओं की गम्भीरता व शोषण की पराकाष्ठा एवं चरमसीमा को देखा जाये तो ये 'गोदान' के नाम पर व्यक्ति का मरते समय भी शोषण कर रही है, और इस व्यवस्था की कठोरता तब और बढ़ जाती है, जब व्यक्ति के मरने के बाद भी कर्मकाण्डों व रीति-रिवाजों के नाम पर उसका शोषण किया जाता है।

अर्थात् धर्म आधारित शोषण व्यवस्था की जड़ें इतनी मज़बूत हैं, जो व्यक्ति का पूरे जीवन तो शोषण करती ही है, साथ-ही-साथ मरने के पश्चात् भी उसका पीछा नहीं छोड़ती।

'जब भगवान ने सबको बनाया है तो कोई छोटा-बड़ा क्यों ?'

ये वक्तव्य होरी के पुत्र गोबर का है। ये वक्तव्य कहीं-न-कहीं दो व्यवस्थाओं के टकराव को दिखाता है, जिसमें एक ओर ग्रामीण हिन्दुस्तान में किसान को गाय खरीदने के लिए भी कर्ज लेना पड़ता है, इसके अतिरिक्त गोहत्या के बाद जाँच करने आये पुलिस के दरोगा ने होरी को भय दिखाकर रिश्वत वसूली, होरी ने कर्ज लेकर दरोगा को रिश्वत दी, इस कर्ज से होरी की कमर ही टूट गयी।

इन सब को देखकर प्रतीत होता है कि "जब न्याय दिलाने वाला ही शिकारी बन जाये (दरोगा) तो व्यवस्था भी भ्रष्टाचार व शोषण आधारित होगी ही।"

वहीं दूसरी ओर शहर के जलसे में पण्डित ओंकारनाथ (बिजली अखबार के सम्पादक) सिद्धान्तों के ज्ञाता, मि. मेहता दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, श्री खन्ना बैंकर, मिस मालती (विलायत में पढ़ी डॉक्टर, आजाद ख्यालों की महिला) श्री तन्खा, वकील ये सभी पढ़े-लिखे तबके के लोग हैं, जो देश की समस्याओं को सिर्फ ड्राइंग रूम में चर्चा का विषय मानते हैं।

वही ज़मींदार रायसाहब भी स्वयं कहते हैं कि "किसी को दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नहीं।"

अर्थात् ये सभी देश की समस्याओं को भली-भाँति समझ रहे हैं, परन्तु यह पढ़े-लिखे तबके का खोखलापन है, कि वह इन समस्याओं को धरातल पर देखना नहीं चाहते, इनसे निपटने की कोशिश नहीं करते।

यह व्यवस्था कहीं-न-कहीं गहरा वर्ग-संघर्ष, गाँव व शहर के बीच की खाई, तथा परम्परा व आधुनिकता का टकराव दिखाती है।

गोदान आज भी प्रासंगिक है। **होरी की त्रासदी एक व्यवस्थागत त्रासदी है, उसकी मौत एक हत्या है।** आज के समय में भी बैंकर, साहूकार, बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ किसानों को ऋण जाल में फँसा रही है। धर्म के ठेकेदार सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक रीति-रिवाजों के नाम पर आज भी गरीबों व किसानों का शोषण कर रहे हैं, जिससे आज भी कुछ वैसी ही स्थिति दिखाई दे रही है, जैसे कि प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास में दिखाई है।

इसलिए गोदान सिर्फ होरी की कहानी नहीं है, बल्कि यह भारत के हर एक किसान एवं मज़दूर के जीवन की हकीकत है। यह व्यवस्थागत शोषण की कहानी है, जो अभी भी जारी है। इसका निवारण जनमानस में बैठी हुई सदियों पुरानी सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों को दूर करके ही किया जा सकता है, और इसकी पहल समाज के बुद्धिज़ीवी वर्ग एवं शासन-प्रशासन के जिम्मेदारों को करनी होगी। भारतीय संविधान की अन्तर्निहित भावना भी यही है कि भारत के जनमानस में वैज्ञानिक सोच-समझ को बढ़ावा दिया जाए और उसे आधुनिक बनाते हुए परम्परागत रूढ़ियों से मुक्त कराने में उसकी सहायता की जाये, जिससे भारत विकसित देशों की अग्रणी पंक्ति में खड़ा हो सके।

वसीम रज़ा इदरीसी
तकनीशियन
(विद्युत गुणवत्ता)
मो. 8124241305

सच्चाई, धोखा और कमजोरी

एक बादशाह अपने वजीर के साथ बाग में घूम रहा था। वह उस दिन बेहद खुश था, बादशाह ने

अपने वजीर से पूछा कि तुम्हारी ख्वाहिश क्या है, वजीर कुछ देर... खामोश रहा, बादशाह की ओर देखा और कहा, मेरी ख्वाहिश है कि आपकी सल्तनत का आधा मालिक मैं बन जाऊं। बादशाह, वजीर की तरफ देखा... और खूब हँसा और बोला कि मैं तुम्हारी ख्वाहिश को पूरा कर दूंगा। उसके लिए तुम्हें तीन सवालात के जवाब देने होंगे। वजीर ने तुरन्त हाँ कह दिया, बादशाह ने मुस्कुराते हुए कहा कि एक बार तुम सोच लो, अगर सवालात के जवाब सही हुए तो आधी सल्तनत तुम्हारी वरना तुम्हारी गर्दन हमारी, वजीर बिल्कुल सोच में पड़ गया, और घबरा गया कुछ समझ नहीं पा रहा था, फिर बादशाह ने वज़ीर की ओर देखा और कहा हमारा सवाल है:-

1- इन्सान की जिन्दगी की सबसे बड़ी सच्चाई क्या है ?

2- इन्सान की जिन्दगी का सबसे बड़ा धोखा क्या है ?

3- और इन्सान की जिन्दगी की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है ?

फिर बादशाह ने वजीर के नाम दो हुकुमनामे बनवाए। एक हुकुमनामे में आधी सल्तनत वजीर के नाम लिखवाई और दूसरी पर वजीर की मौत का फरमान, फिर बादशाह ने कहा कि तुम्हारे पास सिर्फ 30 दिनों का वक्त है। आज से तुम्हारा वक्त शुरू हो चुका है। वजीर ने लालच में आकर हां तो कर दिया था। लेकिन यह सवालात सुनकर वो काफी परेशान हो गया था। फिर वजीर सवालात के जवाब ढूंढने के लिए बेतहाशा महल से निकला। इधर-उधर खूब घूमता रहा, सवालों के जवाब ढूंढता रहा, जंगल-जंगल मारा फिरता रहा पर उसे जवाब नहीं

मिल पा रहा था। 29 दिन गुजर गये थे। एक दिन बचा था। और एक भी जवाब वह ढूंढ न पाया था। मौत उसके सामने नज़र आ रही थी। जंगलों में भटक रहा था। तभी जंगल में एक झोपड़ी नज़र आई। प्यास और भूख की शिद्दत से परेशान हालात में था। तभी झोपड़ी के अन्दर कुछ खाने की तलाश में वह झोपड़ी के अन्दर गया। तभी उसने देखा कि एक बूढ़ा फकीर रोटी के टुकड़े को पानी में भिंगो-भिंगो कर खा रहा था और उसका कुत्ता प्याले में दूध पी रहा था। तभी फ़कीर ने वजीर की ओर देखा और कहा, कि आओ-आओ वजीर आधे सल्तनत के होने वाले वारिस। यह

सुनना था कि वजीर के होश उड़ गये। वजीर सोचने लगा कि इस फकीर को कैसे मालूम कि मैं कौन हूँ। फकीर ने कहा कि तुम्हें तीन सवालात के जवाब चाहिए वो मैं तुम्हें दूँगा। वजीर और सोचने लगा, तभी फकीर जिस चादर पर बैठा हुआ था, यह चादर सिर्फ बादशाह के वजीर के पास हुआ करता है, वजीर सोचने लगा कि इस फकीर के पास कैसे है। फकीर ने कहा ज्यादा मत सोचो, एक जमाने में मैं भी वजीर हुआ करता था, और इसी तरह से बादशाह ने हमसे भी शर्त रखी थी। अब हमारे हाल तुम्हारे सामने है। वजीर फिर परेशान हो गया। वजीर ने पूछा क्या आपको तीन सवालात के जवाब नहीं मिले थे। फकीर जोर-जोर से हँसने लगा। और कुछ देर तक हँसता रहा और वजीर की ओर घूरकर देखता रहा। फिर फकीर ने कहा मुझे तो सवालात के जवाब भी मिल गये थे। और आधी सल्तनत का वारिस भी बन गया था। लेकिन सवालात के जवाब मिलने के बाद मैंने यह हुकुमनामा बादशाह को वापस कर दिया था। अब मैं इस झोपड़ी में, मैं और मेरा कुत्ता बड़े इत्मिनान और सुकून से जिन्दगी गुज़ार रहे हैं। फिर वजीर उस बूढ़े फकीर को घूर के देखता रहा और सोचता रहा। फिर फकीर ने कहा कि मैं तुम्हें तीन सवालात का जवाब देता हूँ-

पहला सवाल का जवाब है इन्सान के जिन्दगी की सबसे बड़ी सच्चाई **मौत** है।

दूसरे सवाल का जवाब है दुनिया का सबसे बड़ा धोखा **जिन्दगी** है।

वजीर की बेचैनी बढ़ने लगी, बूढ़े फकीर ने कहा तीसरे के जवाब के लिए तुम्हें कीमत अदा करनी पड़ेगी। वजीर तुरन्त तैयार हो गया। बूढ़ा फकीर कुछ देर तक उसे देखता रहा। फिर फकीर ने कुत्ते का बचा हुआ दूध का प्याला उसे उठाकर पीने को कहा, अगर तुम पी लोगे तो मैं तुम्हें तीसरे का जवाब मैं दे दूँगा। वजीर ने पहले तो नफ़रत से कुत्ते को और दूध के प्याले को देखा। और दूध

के प्याले को पीने से उसका दिल इन्कार कर रहा था। फिर आधी सल्तनत की लालच, और मौत का खौफ उसे नज़र आने लगी। फिर दूध का प्याला उठाया और एक सांस में उसे पी गया। दूध का प्याला वज़ीर को पीना था, कि बूढ़ा फकीर देखकर जोर-जोर से हँसने लगा। और देखता रहा, फिर कहा कि वजीर तुम्हारा तीसरा सवाल का जवाब है, कि इन्सान की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी अपनी **गर्ज** होती है। वह अपनी गर्ज की खातिर कुत्ते का जूठा दूध का प्याला भी पी सकता है। अपने गर्ज की खातिर ज़िल्लत भी उठा सकता है। वजीर यह सुनकर पसीना-पसीना हो गया, शर्म से उसका सर झुक गया था। फिर वह उदास उस झोपड़ी से निकला और वह महल की ओर चल पड़ा, वजीर को तीन जवाब मिलने के बाद अब वजीर को न तो सल्तनत का लालच था और न मौत का खौफ था, लेकिन दिल में उसे शर्मिंदगी थी कि उसने उस कुत्ते के जूठे दूध का प्याला पिया था। वह महल के बहुत करीब ही था कि अचानक उसे सीने में दर्द हुआ और उसकी रास्ते में मौत हो गयी।

हमें याद रखना चाहिए कि मौत एक सच्चाई है, जो वक्त लिखा है वह होकर रहेगा। और जिन्दगी एक धोखा है। और हम इस धोखे की जिन्दगी के लिए, एक अच्छी जिन्दगी गुजारने के लिए, कुछ पाने के लिए या कामयाबी के लिए या दौलत पाने के लिए या अपनी गर्ज को पूरा करने के लिए हमलोग क्या-क्या नहीं करते, आप सोंचे..., यही इन्सान की, यह सबसे बड़ी कमजोरी अपना गर्ज है, कि हम कुत्ते के जूठे प्याले को भी पीने को तैयार हो जाते हैं। हम इतना गिर जाते हैं कि अपने ज़मीर को बेच देते हैं, अपने गर्ज़ की ख़ातिर.... ।

"वक्त से लड़कर जो नसीहत बदल दे,
इंसान वही है जो तकदीर बदल दे,
कल क्या होगा कभी मत सोच क्या पता...
शायद कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल दे.... ।"
"जिसने दी है जिन्दगी उसका,
साया भी नज़र नहीं आता,
यूँ तो भर जाती हैं झोलियाँ मगर,
देने वाला नज़र नहीं आता.... ।"

नवल किशोर यादव
तकनीशियन-III
(एफ.डब्ल्यू.पी.)
मो. 8804151209

कल और आज का जीवन

अभी कल तक गालियाँ सुनता राहों में,
गांव, समाज, खेत और खलिहानों में।
अभी कल तक ताना सहता अपनों से
अब क्या होगा निठल्ले, बेरोजगारों से।
अभी कल तक चलता मुरझाए हुए राहों में
मुश्किल रहा जीवन, अपनों के निगाहों में।
अभी कल तक उदास और हताश बैठा घरों में,
सूझता नहीं उपाय अंधकारमय गलियारों में।
अभी कल तक अंधेरा लोट रहा जीवन में,
दुनिया के घोर आडम्बर और अफवाहों में।

और आज..... आज प्रसन्न चित्त हैं हृदय के भावों में,
लोग मिले शहर, मोड़ और बाजारों में।
और आज खूब हो रही हैं प्रशंसा
निकट-दूर के हित मित्र और रिश्तेदारों में।
और आज प्रकाश की आभा हैं मन में,
खुशियों का हलचल अंतःतल के भीतर में।
और आज देखा सपनों में खो कर,
मानो उछल रहा हूँ बचपन के बगीचों में।
और आज चमक आईं दुनिया के रंगो में,
लगता है सूर्योदय हुआ है वर्ष महीनों में।

सौरभ कुमार
वरिष्ठ लिपिक
(राजभाषा विभाग)
मो. 7042401724

स्वप्न से सिद्धि तक

जब कोई इच्छाओं का बीज बोता है,
दृढ़ संकल्पों से उसे निरंतर सींचता है,
तब हृदय की सिक्त धरा से, एक स्वप्न फूटता है।
यत्नों से वह पाला जाता है,
जतनों से उसे संभाला जाता है,
जैसे सीपी में सुरक्षित पलता कोई मोती,
जैसे दीपक के भीतर रक्षित जलती ज्योति,
वैसे ही एक स्वप्न, अंतर्मन में पलता है।
शून्य से फिर एक भव्य विश्व का निर्माण होता है,
जहाँ अटल विश्वास हो, वहाँ हर स्वप्न साकार होता है।
स्वर्ग-लोक की गंगा भी उतर आती है धरा पर,
जब 'भागीरथ' सा मन, अडिग और निश्चल होता है।
एक ही ध्येय हो, जिस पर एकाग्र ध्यान हो,
जैसे धनंजय ने धरा, गांडीव पर अचूक बाण हो,
दृष्टि के समक्ष फिर कुछ और न शेष हो,
केवल तू, तेरा पथ और तेरा स्वप्न विशेष हो।
यह वह स्वप्न है, जो जय-पराजय के भाव से परे होता है,
जो परछाईं बनकर, हर कठिन डगर पर साथ चलता है।
लगे जीवन में ठेस कहीं, तो भी तू उसे पूर्णतः संभालता है,
हाँ, ऐसा ही एक स्वप्न... आँखों में नहीं, हृदय में पलता है।

रोहित मिश्र
वरिष्ठ तकनीशियन
(दूरसंचार विभाग)
मो. 9369602817

लालचदास (भक्ति काल)

लालचदास जी एक हलवाई थे। इन्होने संवत् 1585 में 'हरिचरित' और संवत् 1587 में 'भागवत दशम स्कंध भाषा' नामक पुस्तक अवधी मिश्रित भाषा में लिखी। ये दोनों पुस्तकें काव्य की दृष्टि से सामान्य श्रेणी की हैं और दोहे, चौपाइयों में लिखी गई हैं।

दशम स्कंध भाषा का उल्लेख हिन्दुस्तान के फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी ने उल्लेख किया है और उसका अनुवाद फ्रांसीसी भाषा में किया है। 'भागवत भाषा' इस प्रकार की चौपाइयों में लिखी गई हैं -

पंद्रह सौ सत्तासी जहिया। समय विलंबित बरतौ तहिया॥
मास अषाढ़ कथा अनुसारी। हरिबासर रजनी उजियारी॥
सकल संत कहँ नावौं माथा। बलि-बलि जैहौं जादवनाथा॥
रायबरेली बरनि अवासा। लालच रामनाम कै आसा॥

कबीर

1398 - 1518 वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मध्यकालीन भक्ति-साहित्य की निर्गुण धारा (ज्ञानाश्रयी शाखा) के अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विद्रोही संत-कवि।

साँच बराबरि तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है ताके हृदय आप॥

सच्चाई के बराबर कोई तपस्या नहीं है, झूठ (मिथ्या आचरण) के बराबर कोई पाप कर्म नहीं है। जिसके हृदय में सच्चाई है उसी के हृदय में भगवान निवास करते हैं।

राजेश पाल
कनिष्ठ लिपिक
(राजभाषा विभाग)
मो. 9650384804

भय- एक चुनौती

भय कहाँ नहीं, वह रहता यहीं कहीं,
किसी न किसी रूप में, कुछ न कुछ अंश में।
कभी किसी की आँखों में दिख जाता है,
तो कोई इसे मौन में छिपा जाता है।
यह कहीं शांत है, तो कहीं व्यक्त है,
कहीं शिथिल है, तो कहीं सशक्त है।
किसी को आरंभ से भय, किसी को अंत का,
कोई असत्य से डरता है, कोई सत्य का।
कोई अप्रत्याशित से भयभीत, किसी को भय प्रत्यय का,
कोई रुका है गिरने के डर से,
तो कोई अविराम है, बस ठहरने के डर से।
कोई इन भयों में दबा रह जाता है,
और कोई इनसे ऊपर उठकर 'जीवित' हो जाता है।
बस वही अंतर है—डूबने में और उभरने में,
वही अंतर है—प्रज्वलित होने और ओझल होने में।
एक रेखा है जिसे लाँघना है, एक वचन स्वयं को देना है,
हर भय को छोड़ पीछे, नित्य अग्रसर रहना है।
जब तक पा न लें लक्ष्य अपना, बन अडिग शिखर रहना है,
भय की राख से उठकर ही, नया इतिहास बुनना है।

विमलेश कुमार गुप्ता
वरि. आशुलिपिक
(कार्मिक विभाग)
मो. 8707259285

भारत मेरी पहचान

हम हिंदुस्तानी हैं, दुश्मनों को घुसने नहीं देंगे।
हम हिंदुस्तानी हैं, दुश्मनों को घुसने नहीं देंगे।
हम शेर हैं, बिल्ली को रुकने नहीं देंगे।
वीरों से भरी है मेरे देश की धरती,
हम अपना प्यारा तिरंगा कभी झुकने नहीं देंगे।
हम अपना प्यारा तिरंगा कभी झुकने नहीं देंगे।
भारत है पहचान मेरी और तिरंगा शान मेरी,
भारत है पहचान मेरी और तिरंगा शान मेरी।
दुनिया में सबसे न्यारा है,
मुझे देश जान से प्यारा है।
बस यही स्वर्ग-द्वार है,
इसके लिए तो हर पल हाज़िर जान मेरी।
भारत है पहचान मेरी और तिरंगा शान मेरी।
सबसे पहले देश की रक्षा,
हमको यही सिखाया है।
देश की खातिर पुरखों ने भी अपना खून बहाया है।
मेरा भारतवर्ष है आन, मान और शान मेरी,
भारत है पहचान मेरी और तिरंगा शान मेरी।
देश पे मिटना जिस दिल में, इंसान नहीं, भगवान है वो।
देश पे जो होते कुर्बान,
इंसान रूप भगवान है वो।
रोम-रोम में बसा है हिंदुस्तान,
भारत है पहचान मेरी और तिरंगा शान मेरी।

मेरा भी यह सपना है,
मैं काम देश के आऊँ।
जब तक तन में प्राण रहें,
मैं बस तेरा ही गुण गाऊँ।
भारत माता इस दिल में है।
आजादी की कभी शाम न होने देंगे,
शहीदों की कुर्बानी बदनाम न होने देंगे।
बची है एक बूँद भी लहू की,
तब तक अपनी भारत माता को
कभी नीलाम न होने देंगे।
जय हिंद! जय भारत!

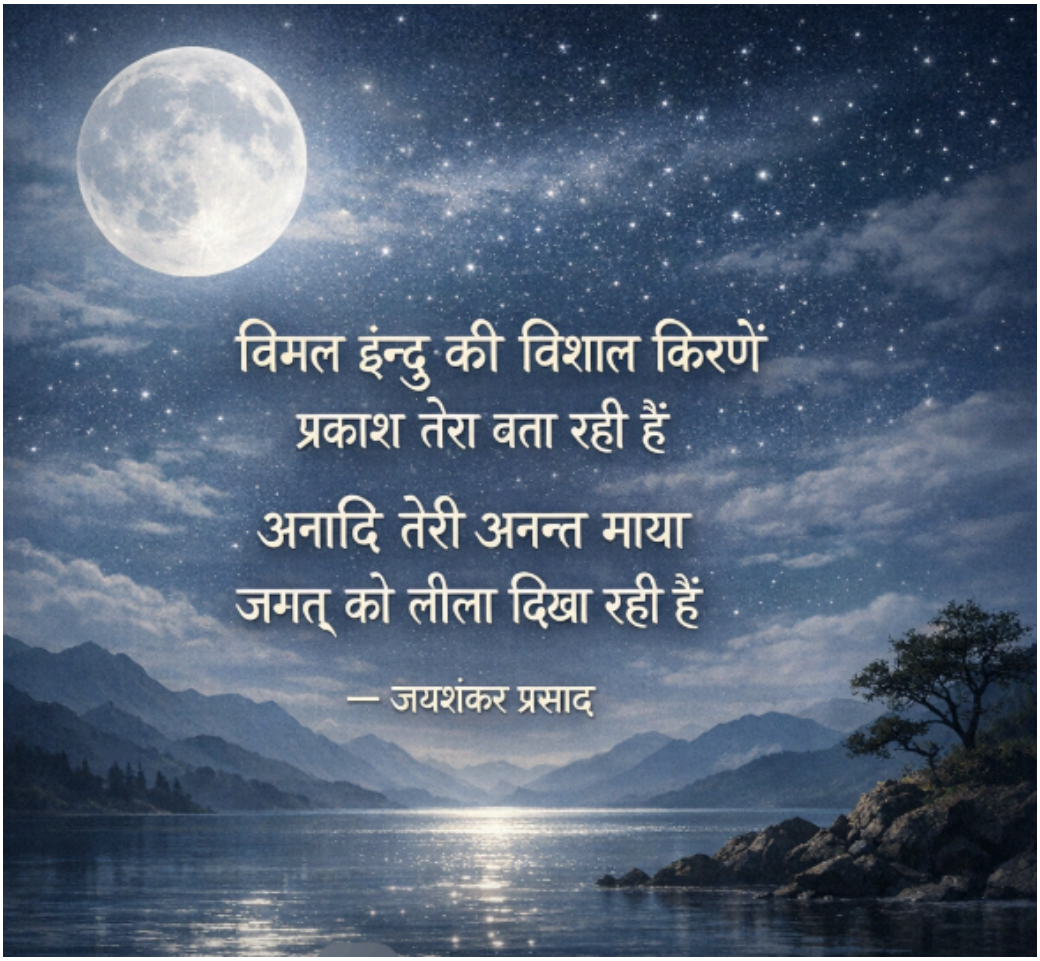

शिखा रावत
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
(कार्मिक विभाग)
मो. 7985787256

कर्ण-कुन्ती संवाद

नियती ने फिर चली, नई एक चाल है, सगे पुत्र के सामने खड़ी आंचल खोले माँ है।
पुत्र होके मैं तेरा कहलाया शूद्पुत्र हूँ , माधव जिसके भय से डरा वही राधे पुत्र हूँ।
गलती ना तेरी इसमें नाही तेरी हार है, करनी तो सब में उस कृष्ण की चाल है।

कुन्ती

तुझे छोड़कर मुझे कभी, फिर ना कोई सुख मिला , प्यार ना दिया तुझे कभी, इसी बात का है गिला।
करती भी क्या मैं उस कुंवारी उम्र में, छोड़ दिया तुझको एक ही क्षण में।
ठुकराया मैंने तुझे जिस समाज के डर से, बोलती हूँ आज मैं, तू पुत्र है मेरा गर्व से।
चाह नहीं की मुझे माफ कर तू बेटा, बस उस समय मुझसे राजभोग न छूटा।

कर्ण का जवाब

कौमार्य की उम्र में तुमने है मुझे छोड़ा, एक पल में बेटे का माँ से है नाता तोड़ा
जब भी जरूरत मुझे तुम्हारी, ठुकराया है मुझे, अपने गोद से उतार गंगा में बहाया है मुझे।
जन्म लेकर भी आपसे अमृत धारा न पाया, पाकर अपनी गोद में राधा को प्यार आया।
देता हूँ वचन मैं कम ना होंगे लाल तेरे, अर्जुन छोड़ चारों कर्ण आज हुए दान तेरे।
आयेंगे ये सामने जब, दूंगा जीवन दान मैं, तीरों को अपने रोक कर, बढ़ाऊँगा तेरा मान मैं।
दबी बातों को अब माँ यूँ ना उछालो, नामुमकिन बातों को अपनी वाणी से ना निकालो।
जिन्दा हूँ जब तक राधे पुत्र ही कहलाऊँगा , मरते समय भी मैं उन्हीं का होना चाहूँगा।
आये हैं नियति पर जब, बता दूँ एक बात सबको, नियति भी हारेगी वहाँ, दूँगा ऐसा जवाब सबको।

गौरंग बोरो
निरीक्षक, रेलवे सुरक्षा बल, बेंगलुरु मंडल
(दक्षिण पश्चिम रेलवे)
मो. 9731913865

प्रगति की शान....

(कविता)

(प्रिय मित्रों... मैं गौरांग बोरो, निरीक्षक, रेल सुरक्षा बल, बेंगलुरु मंडल, द.प. रेलवे से... आरेडिका, रायबरेली में गत वर्ष सम्पन्न अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता का प्रतिभागी रहा हूँ और आरेडिका में बिताये गये पलों को कविता के माध्यम से साझा कर रहा हूँ... आशा है कि आपको वास्तविकता से रूबरू कराने में सफल रहूँगा)

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना,
हरियाली की गोद में बसा,
विकास का उज्ज्वल द्वार,
रायबरेली की धरती पर,
रेल स्वप्नों का आकार।
आधुनिक मशीनों की गूँज,
तकनीक का नव संचार,
विश्वस्तरीय संरचना में,
आत्मनिर्भर भारत साकार।

स्टील की धड़कन,
श्रम का सम्मान,
हर कोच में झलकता है,
राष्ट्र निर्माण का ज्ञान।
उत्पादन की गति,
गुणवत्ता की पहचान,
राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाकर,
बढ़ाया देश का मान।

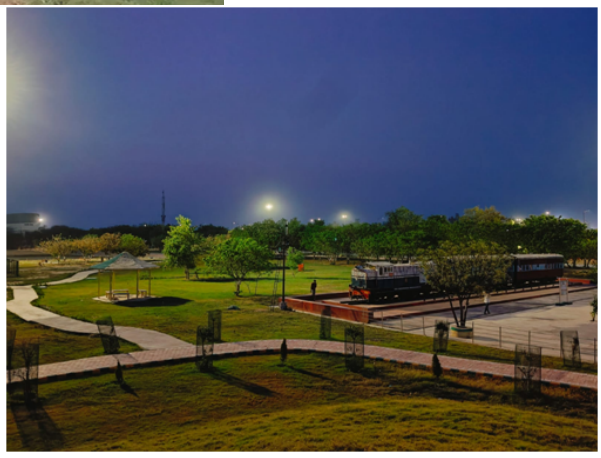

स्वच्छ परिसर,
सौर ऊर्जा का प्रकाश,
प्रकृति संग संतुलन,
विकास का विश्वास।
डिजिटल प्रबंधन,
कुशल नेतृत्व की छाप,
टीमवर्क की शक्ति से,
हर लक्ष्य हुआ प्राप्त।

नई सोच, नया भारत,
नई रेल की कहानी,
रायबरेली का कारखाना,
बना आत्मगौरव की निशानी।
पटरी-पटरी दौड़ती,
प्रगति की यह शान,
मॉडर्न कोच फैक्ट्री,
देश का अभिमान।

साकेत

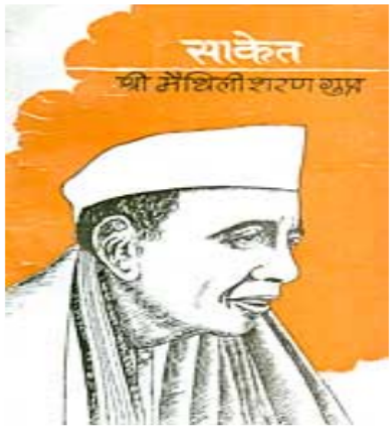

रचनाकार	मैथिलीशरण गुप्त
प्रकाशक	साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
वर्ष	सितंबर २५, २००५

राम, तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।

रचनाकार: श्री मैथिलीशरण गुप्त

आरेडिका में नाट्य महोत्सव, रेल कर्मियों की प्रतिभा का प्रदर्शन

रायबरेली। (स्पष्ट आवाज) आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका) में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में देशभर से आए रेल कर्मियों ने अपनी अभिनय प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। 21 मार्च से 25 मार्च तक चल रहे इस नाट्य महोत्सव का शुभारंभ रविवार को गरिमामय वातावरण में हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं महानिरीक्षक सह प्रधान सुरक्षा आयुक्त रमेश चन्द्र तथा उपनिदेशक राजभाषा, रेलवे बोर्ड सतविंदर सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

उद्घाटन के बाद आरेडिका सांस्कृतिक संगठन ने आकर्षक स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर माहौल को जीवंत बना दिया। नाट्योत्सव की शुरुआत आरेडिका की प्रस्तुति "परिणति" से हुई, जिसने अपने सशक्त अभिनय और प्रस्तुति से दर्शकों की खूब सराहना बटोरी। नाटक के लेखक विश्वेश्वर प्रसाद एवं निर्देशक अंगद सिंह कुशवाहा रहे। कलाकारों में साधना कुमारी, अरविंद कुमार ओझा, श्वेता ओझा, आदित्य प्रकाश, भारतेंदु, साक्षी और विनायक ने अपनी भूमिकाओं को प्रभावशाली ढंग से निभाया। संगीत, प्रकाश और मंच सज्जा ने प्रस्तुति को और भी सजीव बना दिया।

प्रथम दिवस पर दक्षिण रेलवे का "पहला गोल", बनारस रेल इंजन कारखाना का "ऑक्टोपस", दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का "फ्लाइंग रानी", पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे का "द्रौपदी", उत्तर रेलवे का "जिस लाहौर नहीं देख्या ओह जम्या नहीं (बंटवारा)" तथा दक्षिण पश्चिम रेलवे का "अहिंसा की विजय" जैसे नाटकों ने अपनी मार्मिक प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया। दूसरे दिन भी नाट्य प्रस्तुतियों का सिलसिला जारी रहा, जिसमें पूर्वोत्तर रेलवे का "प्रेसर", चितरंजन रेल इंजन कारखाना का "कालान्तर", पूर्व रेलवे का "महाभारत का गदा युद्ध", पूर्व तट रेलवे का "मृग कस्तूरी", पश्चिम रेलवे का "बताशा", दक्षिण पूर्व रेलवे का "खून एक है", मध्य रेलवे का "आधे-अधूरे" तथा उत्तर पश्चिम रेलवे का "राजा मांगे पसीना" प्रमुख रहे। कार्यक्रम का संचालन आरेडिका के राजभाषा अधिकारी राकेश रंजन द्वारा किया गया। नाट्योत्सव में देशभर के रेल कर्मियों की सहभागिता और उनकी सृजनात्मक प्रस्तुतियों ने आयोजन को यादगार बना दिया।

आरेडिका में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव

रायबरेली, 23 मार्च (विप्र)। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में 21 से 25 मार्च तक आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का शुभारंभ रविवार, 22 मार्च को हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं महानिरीक्षक सह प्रधान सुरक्षा आयुक्त रमेश चन्द्र तथा उपनिदेशक राजभाषा, रेलवे बोर्ड सतविंदर सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। उद्घाटन उपरांत आरेडिका सांस्कृतिक संगठन द्वारा आकर्षक स्वागत नृत्य की प्रस्तुति दी गई। नाट्योत्सव का प्रारंभ आरेडिका द्वारा प्रस्तुत नाटक ''परिणति'' से हुआ, जिसने दर्शकों की भरपूर सराहना एवं तालियां प्राप्त कीं। इस नाटक के लेखक विश्वेश्वर प्रसाद एवं निर्देशक अंगद सिंह कुशवाहा थे। प्रमुख भूमिकाओं में विश्वेश्वर प्रसाद, साधना कुमारी, अरविंद कुमार ओझा, श्वेता ओझा, आदित्य प्रकाश, अंगद, भारतेंदु, साक्षी एवं विनायक शामिल रहे। नाटक में संगीत एवं ध्वनि संयोजन विवेकानंद एवं दीपक द्वारा तथा प्रकाश प्रभाव रजिंदर वर्मा एवं गिरीश द्वारा दिया गया, जबकि रूप सज्जा का कार्य सविता ने किया। प्रथम दिवस पर अन्य रेलवे द्वारा भी निम्न उत्कृष्ट नाट्य प्रस्तुतियां दी गईं,''पहला गोल'' (दक्षिण रेलवे), ''ऑक्टोपस'' (बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी),''फ्लाइंग रानी'' (दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे), ''द्रौपदी'' (पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे, गुवाहाटी),''जिस लाहौर नहीं देख्या ओह जम्या नहीं (बंटवारा)'' (उत्तर रेलवे),''अहिंसा की विजय'' (दक्षिण पश्चिम रेलवे) सभी नाटकों ने अपनी प्रभावशाली एवं मार्मिक प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया। नाट्योत्सव के दूसरे दिन पूर्वोत्तर रेलवे के कलाकारों द्वारा ''प्रेसर'', चितरंजन रेल इंजन कारखाना ने ''कालान्तर'', पूर्व रेलवे ने ''महाभारत का गदा युद्ध,'' पूर्व तट रेलवे ने ''मृग कस्तूरी,'' पश्चिम रेलवे ने ''बताशा,'' दक्षिण पूर्व रेलवे ने '' खून एक है,'' मध्य रेलवे ने ''आधे –अधूरे'', उत्तर पश्चिम रेलवे ने ''राजा मांगे पसीना,'' आदि नाट्य प्रस्तुतियां की। कार्यक्रम में मंच संचालन आरेडिका के राजभाषा अधिकारी श्री राकेश रंजन द्वारा किया गया।

आरेडिका में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का होगा भव्य आयोजन

लोहिया भूमि संवाददाता

रायबरेली। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में दिनांक 21.03.2026 से 25.03.2026 तक अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का भव्य आयोजन रेलवे बोर्ड के तत्वावधान एवं आरेडिका राजभाषा विभाग के सौजन्य से होने जा रहा है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे, प्रशिक्षण संस्थानों एवं उत्पादन इकाइयों की 21 टीमों के रेलवे नाट्य कर्मी तथा रेलवे बोर्ड राजभाषा निदेशालय के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित कुल 350 लोग शामिल होगें। ज्ञात हो कि रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रत्येक वर्ष अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव (आधार वर्ष 2025) के आयोजन का अवसर आरेडिका को प्रदान किया गया है। महाप्रबंधक विवेक खरे ने प्रतियोगिता में विभिन्न रेलवे के प्रतिभागियो को शुभकामनाएं दी। आरेडिका के मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं महानिरीक्षक सह प्रधान सुरक्षा आयुक्त रमेश चन्द्र ने बताया कि आगुन्तक प्रतिभागियों और रेलवे बोर्ड के अधिकारियों के लिए आरेडिका के राजभाषा विभाग द्वारा परिवहन, आवास एवं भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की गयी है। खिलाड़ियों के उचित मार्गदर्शन हेतु टीमें बनायी गयी हैं, जिससे आगुन्तक को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े और नाट्योत्सव का सफल अयोजन हो सके।आरेडिका के राजभाषा अधिकारी राकेश रंजन ने बताया कि अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव के सफल आयोजन के लिए सभी विभागों के लोगों को मिलाकर एक प्रबंधन टीम बनायी गयी हैं, ताकि व्यवस्थाओं का सुचारू रुप से संपन्न कराया जा सके।

आरेडिका में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में नाटकों का हुआ मंचन

❑ रेल कर्मियों ने दिखाई अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा

लोहिया भूमि संवाददाता

रायबरेली। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में दिनांक 21.03.2026 से 25.03.2026 तक आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का शुभारंभ रविवार, दिनांक 22.03.2026 को हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं महानिरीक्षक सह प्रधान सुरक्षा आयुक्त रमेश चन्द्र तथा उपनिदेशक राजभाषा, रेलवे बोर्ड सतविंदर सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। उद्घाटन उपरांत आरेडिका सांस्कृतिक संगठन द्वारा आकर्षक स्वागत नृत्य की प्रस्तुति दी गई। नाट्योत्सव का प्रारंभ आरेडिका द्वारा प्रस्तुत नाटक परिणति से हुआ, जिसने दर्शकों की भरपूर सराहना एवं तालियां प्राप्त कीं। इस नाटक के लेखक विश्वेश्वर प्रसाद एवं निर्देशक अंगद सिंह कुशवाहा थे। प्रमुख भूमिकाओं में विश्वेश्वर प्रसाद, साधना कुमारी, अरविंद कुमार ओझा, श्वेता ओझा, आदित्य प्रकाश, अंगद, भारतेंदु, साक्षी एवं विनायक शामिल रहे। नाटक में संगीत एवं ध्वनि संयोजन विवेकानंद एवं दीपक द्वारा तथा प्रकाश प्रभाव रजिंदर वर्मा एवं गिरीश द्वारा दिया गया, जबकि रूप सज्जा का कार्य सविता ने किया। प्रथम दिवस पर अन्य रेलवे द्वारा भी निम्न उत्कृष्ट नाट्य प्रस्तुतियां दी गईं, पहला गोल (दक्षिण रेलवे), ऑक्टोपस (बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी),फ्लाईंग रानी (दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे), द्रौपदी (पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे, गुवाहाटी),जिस लाहौर नहीं देख्या ओह जम्या नहीं (बंटवारा) (उत्तर रेलवे),अहिंसा की विजय (दक्षिण पश्चिम रेलवे) सभी नाटकों ने अपनी प्रभावशाली एवं मार्मिक प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया। नाट्योत्सव के दूसरे दिन पूर्वोत्तर रेलवे के कलाकारों द्वारा ''प्रेसर'', चितरंजन रेल इंजन कारखाना ने ''कालान्तर'', पूर्व रेलवे ने ''महाभारत का गदा युद्ध,'' पूर्व तट रेलवे ने ''मृग कस्तूरी,'' पश्चिम रेलवे ने ''बताशा,'' दक्षिण पूर्व रेलवे ने '' खून एक है,'' मध्य रेलवे ने ''आधे –अधूरे'', उत्तर पश्चिम रेलवे ने ''राजा मांगे पसीना,'' आदि नाट्य प्रस्तुतियां की। कार्यक्रम में मंच संचालन आरेडिका के राजभाषा अधिकारी श्री राकेश रंजन द्वारा किया गया।

प्रगति

आरेडिका की झलकियाँ

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में आरेडिका की सहभागिता

आरेडिका में 'विश्व महिला दिवस' पर विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में सम्मिलित महिलाएं

प्रगति

आरेडिका की झलकियाँ

हरित ऊर्जा के क्षेत्र में एक और प्रयास, 1050 किलोवाट रूफटॉप सोलर पैनल का उद्घाटन करते निवर्तमान महाप्रबंधक, आरेडिका

रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव-2025 में आरेडिका के खाते में बेस्ट स्क्रिप्ट एवं सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार पुरस्कार

आरेडिका में तीन दिवसीय हिंदी नाट्य कार्यशाला का आयोजन

आरेडिका में राजभाषा को नई गति, 'प्रगति' का विमोचन

आरेडिका राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक (दिसम्बर, 2025) सम्पन्न एवं गृह पत्रिका 'प्रगति' का विमोचन करते महाप्रबंधक एवं समिति के सदस्य

तीन दिवसीय हिंदी नाट्य कार्यशाला में अभ्यासरत आरेडिका नाट्यकर्मी

मैत्रेयी पुष्पा

जन्म : 30 नवम्बर, 1944, अलीगढ़ ज़िले के सिकुर्रा गाँव में।

आरम्भिक जीवन : जिला झाँसी के खिल्ली गाँव में।

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बुंदेलखंड कॉलेज, झाँसी।

कृतियाँ : चिन्हार, गोमा हँसती है, ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ, पियरी का सपना, प्रतिनिधि कहानियाँ, समग्र कहानियाँ (कहानी-संग्रह); बेतवा बहती रही, इदन्नमम, चाक, झूला नट, अल्मा कबूतरी, अगनपाखी, विजन, कही ईसुरी फाग, त्रिया हठ, गुनाह-बेगुनाह (उपन्यास); कस्तूर कुंडल बसै, गुड़िया भीतर गुड़िया (आत्मकथा); खुली खिड़कियाँ, सुनो मालिक सुनो, चर्चा हमारा, आवाज़, तब्दील निगाहें (स्त्री विमर्श); फाइटर की डायरी (रिपोर्ताज)।

फैसला कहानी पर टेलीफिल्म वसुमती की चिट्ठी।

सम्मान : सार्क लिट्रेरी अवार्ड और 'द हंगर प्रोजेक्ट' (पंचायती राज) का सरोजिनी नायडू पुरस्कार एवं कई पुरस्कारों से सम्मानित। मंगला प्रसाद पारितोषिक, प्रेमचंद सम्मान, हिन्दी अकादमी का साहित्यकार सम्मान, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का वीरसिंह जूदेव पुरस्कार आदि।

संरक्षक
श्री विवेक खरे
महाप्रबंधक

मुख्य सम्पादक
श्री रमेश चन्द्र
मुख्य राजभाषा अधिकारी

उप मुख्य सम्पादक
श्री अभिनव यादव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

सम्पादक
श्री राकेश रंजन
राजभाषा अधिकारी